तुम चलो हम चलें सब मदीने चलें
जानिब ए तैबा सब के सफ़ीने चलें

(हुज़ूर अज़हरी मियां)

सफ़ीना ए बख़्शिश

अज़

जानशीन हुज़ूर मुफ्ती ए आज़म हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह

कलाम :- हुज़ूर ताजुश्शरियाह हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह

नाम किताब :- सफ़ीना ए बख़्शिश

गुफ़्तनी

नबीरा ए आ'ला हज़रत, सानी हुज्जत उल इस्लाम, जानशीन हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़म हिन्द, ताजुश्शरियाह हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह यह शख़्सीयत आलम ए इस्लाम ख़ुसूसन बर्रे सगीर हिन्द ओ पाक में किसी तआरुफ़ की मोहताज नहीं. आप हर जिहत से अपने आबा ओ अजदाद हक़ीक़ी वारिस और जानशीन हैं. इल्म ओ फ़ज़्ल, ज़ोहद ओ तक़वा के पैकर और पासदारी शरअ में अपने असलाफ़ के अक्स ए जमील हैं.

"वली वो जिसे देखकर ख़ुदा याद आ जाए." ये एक मशहूर मक़ूला है और हुज़ूर ताजुश्शरियाह इस मक़ूला की मुंह बोलती तस्वीर है. निकहत ओ नूर बरसते हुए हसीन चेहरे पर ऐसी दिलकशी है जिसपर सज धज और बनाओ सिंगार की हजारों रअनाईयां निसार. अगर लाखों के मजमा में जलवाबार हों तो अहले जमाल की आंखें ख़ैर हो जाएं. आप इल्मे ज़ाहिरी का ठांठे मारता हुआ समुंदर और इल्मे बातिनी के कोहे गिरां हैं. कशवर ए इल्म ओ फ़ज़्ल के शहंशाह और क़लीम रूहानियत के ताजदार हैं.

हुज़ूर ताजुश्शरियाह की शख़्सीयत का बाग़ौर मुताअला करने से ये अम्र वाज़ेअ होता है के आपको दीन ओ मज़हब से वालिहाना वाबस्तगी के साथ साथ मोज़वने तबअ, ख़ुश कलामी, शअर गोई और शायराना ज़ौक़ भी विरसे में मिला है.

आप ब-यक वक़्त मुफ़क्कीर ओ मुदब्बीर और मुहद्दिस ओ फ़क़ीह होने के साथ साथ एक अज़ीम आशिक़ ए रसूल ﷺ और उम्दा नाअत गो शायर भी हैं. आपको नए लबो लेहजा में नाअतिया अशआर कहने में ज़बरदस्त मलकह हासिल है. आपकी शायरी माअनवियत व पैकर तराशी, सरशारी ओ सिफ़तगी का नादिर नमूना है और आपके क़ल्ब से निकलने वाले अशआर फ़साहत ओ बलाग़त, हलावत ओ मलाहत जज़्बो कैफ़ और सोज़ ओ गिराज़ में डूबे हुए होते हैं.

तालिब ए दुआ :- सय्यद मुबीन इब्ने गैबु साहब रिज़वी

<u>फ़ेहरिस्त</u>

<u>नम्बर शुमार</u> *<u>सफ़हा नम्बर</u>*


Hazrat Allama Muhammad Akhtar Raza Qadri Azhari
TAJUSH SHARIAH SALAAMAT RAHEIN

01. क़सीदाह फ़िल हम्दी व मद'ही नबीय्यी ﷺ

﷽

अल्लाह अल्लाह अल्लाहू माली रब्बून इल्ला हू	اَللہ اَللہ اَللہُ - مَالِیْ رَبٌّ اِلَّاھُو
यफ़नल कुल्लु व यबक़ा हू लैयसल बाक़ी इल्ला हू	يَفْنَى الْكُلُّ وَيَبْقَى هُوْ- لَيْسَ الْبَاقِيْ اِلَّاهُو
मन काना दुआहू अय या हू ज़ाका हमीदुन उक़बाहू	مَن كَانَ دُعَاهُ اَنْ يَّاهُو - ذَاكَ حَمِيْدٌ عُقْبَاهُ
मन काना लि रब्बी दुनिया हू आशा सईदन उख़राहू	مَنْ كَانَ لِرَبِّى دُنْيَاهُ - عَاشَ سَعِيدًا اُخْرَاهُ
मन कुन्ता इलाही मौला हू कुल्लुन नासी तवल्लाहू	مَن كُنْتَ اِلَهِیْ مَوْلَاهُ - كُلُّ النَّاسِ تَوَلَّاهُ
मम माता यक़ुलू अल्लाहू ज़ाकल ख़ालिदू महयाहू	مَنْ مَّاتَ يَقُوْلُ اللهُ - ذَاكَ الْخَالِدُ مَحْيَاهُ

रुस्लुल्लाही तलक़्क़ाहू
अबशिर अब्दु बिहुस्नाहू

رُسْلُ اللهِ تَلَقَّاهُ - اَبْشِرْعَبْدُبِحُسْنَاهُ

अर्रिदवानू लहु नुज़्लुन
जन्नतु ख़ुल्दिन मां वाहू

اَلرِّضْوَانُ لَهُ نُزُلٌ - جَنَّةُ خُلْدٍ مَّاْوَاهُ

तख़्शं नासा बिला जदवा
हल्ला रब्बका तख़्शा हू

تَخْشَى النَّاسَ بِلَاجَدْوَى - هَلَّا رَبَّكَ تَخْشَاهُ

इब्ग़िल अम्ना लदा रब्बी
इन्नल अम्ना बितक़वाहू

اِبْغِ الْاَمْنَ لَدىٰ رَبِّىْ - اِنَّ الْاَمْنَ بِتَقْوَاهُ

तनसा रब्बका या फ़ानी
दम्म इन शिता बिज़िकराहू

تَنْسىٰ رَبَّكَ يَا فَانِىْ - دُمْ اِنْ شِئْتَ بِذِكْرَاهُ

तरजुन नासा लिजदवाहुम
इन्नल जदवा जदवाहू

تَرْجُو النَّاسَ لِجَدْوَا هُمْ - اِنَّ الْجَدْوىٰ جَدْوَاهُ

हल ग़ैराका यख़शा रब्बी
ग़ैरुका रब्बी यख़शाहू

هَلْ غَيْرَكَ يَخْشىٰ رِبِّىٌّ - غَيْرُكَ رَبِّىْ يَخْشَاهُ

रब्बी रब्बुल अरबाबी
लैयसायुदाहा हा'शा हू

رَبِّیْ رَبُّ الاَّ رْبَابِ - لَیْسَ یُضَاهَی حَاشَاهُ

फ़सिवाहु रब्बुम बिल इस्मी
व इलाहुल हक़्क़ी यर'आ हू

فَسِوَاهُ رَبُّ بِالْاِسْمِ - وَاِلَهُ الْحَقِّ یَرْعَاهُ

अल वाहिदु लैसा बिज़ि जुज़इन
ला वाहिदा हक़्क़न इल्ला हू

اَلْوَاحِدُ لَیْسَ بِذِیْ جُزْءٍ - لَاوَاحِدَ حَقًّا اِلَّاهُوْ

अल ख़ल्क़ु मारा या मौजुदिन
ला मौजुदा इल्ला हू

اَلْخَلْقُ مَرَا یَا مَوْجُوْدٍ - لَا مَوْجُوْدَ اِلَّاهُوْ

वल कुल्लु मज़ाहिरू मशहूदिन
ला मशहूदा इल्ला हू

وَالْكُلُّ مَظَاهِرُ مَشْهُوْدٍ - لَا مَشْهُوْدَ اِلَّاهُوْ

फ़रदुन हक़्क़ा इला हातुहू
ला माअबूदा इल्ला हू

فَرْدٌّ حَقَّ اِلَا هَتُهُ - لَا مَعْبُوْدَ اِلَّا هُوْ

वनहल्ला सलातुल्लाही अ'ला
मन लैसा शफ़ीअन इल्ला हू

وَانْهَلَّ صَلَاةُ اللهِ عَلیٰا - مَنْ لَّیْسَ شَفِیْعًا اِلَّا هُوْ

मम बिद्दीनी अह'याना हय्याल्लाहु मुहय्याहू	مَنْ بِالدِّيْنِ اَحْيَانَا - حَيَّ اللهُ مُحَيَّاهُ
अम्मल कौना बि-रहमतीही कुल्लुर रुहमा रुहमाहू	عَمَّ الْكَوْنَ بِرَحْمَتِهِ - كُلُّ الرُّحْمیٰ رُحْمَاهُ
वज़दाना बिलादुल्लाही बिही फ़ल्कुल्लु ज़लामुन लौलाहू फ़ल्कौनु ज़लामुन लौलाहू	وَازْدَانَ بِلَادُ اللهِ بِهِ - فَالْكُلُّ ظَلَامٌ لَوْلَاهُ فَالْكَوْنُ ظَلَامٌ لَوْلَاهُ
जा'अ जमीलुर रह'मानी फ़श्कुर तज़दद ना'माहू	جَاءَ جَمِيْلُ الرَّحْمَانِ - فَاشْكُرْ تَزْدَدْ نَعْمَاهُ
हल्लल फ़रहू बि-मौलिदीही फ़फ़रह हत्ता तलक़ाहू	حَلَّ الْفَرْحُ بِمَوْلِدِهِ - فَافْرَحْ حَتّٰى تَلْقَاهُ
क़दनिता हयातुल कौनि बिही फ़ल कौनु अ'दीमुन लौलाहू	قَدْ نِيْطَ حَيٰوةُ الْكَوْنِ بِهِ - فَالْكَوْنُ عَدِيْمٌ لَّوْلَاهُ
या मन यतलुबु रिदवाना मार्रिदवाह इल्ला इय्याहू	يَا مَنْ يَّطْلُبُ رِضْوَانَا - مَاالرِّضْوَهُ اِلَّا اِيَّاهُ

कुल लिनबीय्यिल्लाही रिदा
तहद्वा लदैही बिज़ुल्फ़ाहू

كُنْ لِّنَبِيِّ اللهِ رِضىا - تَحْظَ لَدَيْهِ بِزُلْفَاهُ

इन्ना निअ'मतु अह'मदुना ﷺ
या तालिबी नेअ'मती मौलाहू
अल्लाहु इलैना अहदाहू

اِنَّ النِّعْمَةَ اَحْمَدُنَا ﷺ - يَا طَالِبَ نِعْمَةِ مَوْلَاهُ
اَللهُ اِلَيْنَا اَهْدَاهُ

बिरसूलिल्लाही फ़ब्ताहिजू
फ़हुवल फ़ज़्लु व बुशराहू

بِرَسُوْلِ اللهِ فَابْتَهِجُوْا - فَهْوَا الْفَضْلُ وَبُشْرَاهُ

बिल्लाही ता'अय्यादा नासिरुना
ला युख़ज़लु मन क़द रज्जाहू

بِاللهِ تَاءَيَّدَنَاصِرُنَا - لَايُخْذَلُ مَنْ قَدْ رَجَّاهُ

अदरिक अ'ब्दका जिलानी
मन ग़ैरुका यदफ़ा'ऊ बलवाहू

اَدْرِكْ عَبْدَكَ جِيْلاَنِيْ - مَنْ غَيْرُكَ يَدْفَعُ بَلْوَاهُ

वयज़ुरू सलामुर रहमानी
ख़ैरा नबीय्यीन नब्बाहू

وَيَزُوْرُسَلاَمُ الرَّحْمَنِ - خَيْرَ نَبِيٍّ نَبَّاهُ

हाज़ा अख़्तरु अदनाकुम
रब्बी अहसना मसवा हू.

هَذَا اَخْتَرُ اَدْنَاكُمْ - رَبِّىْ اَحْسَنَ مَثْوَاهُ

02. जहां बानी अ'ता कर दें

जहां बानी अ'ता कर दें भरी जन्नत हिबा कर दें
नबी मुख़्तार ए कुल हैं जिसको जो चाहे अता कर दें

जहां में उनकी चलती है वोह दम में क्या से क्या कर दें
ज़मीं को आसमां कर दें सुरय्या को सरा कर दें

फ़ज़ा में उड़ने वाले यूं ना इतराएं निदा कर दें
वो जब चाहे जिसे चाहे उसे फ़रमां रवां कर दें

मेरी मुश्किल को यूं आसां मेरे मुश्किल कुशा कर दें
हर एक मौज ए बला को मेरे मौला नाख़ुदा कर दें

मुनव्वर मेरी आंखों को मेरे शम्सु-दुहा कर दें
ग़मों की धूप में वो साया ए ज़ुल्फ़ ए दुता कर दें

अ'ता हो बेख़ुदी मुझको ख़ुदी मेरी हवा कर दें
मुझे यूं अपनी उल्फ़त में मेरे मौला फ़ना कर दें

जहां में आम पैग़ाम ए शहे अहमद रज़ा कर दें
पलट कर पीछे देखें फिर से तजदीद ए वफ़ा कर दें

नबी से जो हो बेगाना उसे दिल से जुदा कर दें
पिदर, मादर, बिरादर, माल ओ जान उन पर फ़िदा कर दें

तबस्सुम से गुमां गुज़रे शब ए तारीक पर दिन का
ज़िया ए रुख़ से दीवारों को रोशन आईना कर दें

किसी को वोह हंसाते हैं किसी को वोह रुलाते हैं
वोह यूं ही आज़माते हैं वोह अब तो फ़ैसला कर दें

गिल ए तैबाह में मिल जाऊं गुलों में मिल के खिल जाऊं
हयात ए जावेदानी से मुझे यूं आशना कर दें

उन्हें मंज़ूर है जब तक ये दौर ए आज़माईश है
ना चाहें तो अभी वोह ख़त्म दौर ए इब्तिला कर दें

सग ए आवारा ए सहरा से उकता सी गई दुनिया
बचाओ अब ज़माने का सगान ए मुस्तफ़ा कर दें

मुझे क्या फ़िक्र हो अख़्तर मेरे यावर हैं वोह यावर

बलाओं को जो मेरी ख़ुद गिरफ़्तार ए बला कर दें.



-: क़ुरआन शरीफ़ :-

"(ऐ महबूब ﷺ) और हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़िक्र बुलंद कर दिया."

[सुरह इंशराह आयत 4, कंज़ उल ईमान शरीफ़]

03. मुस्तफ़ा ए ज़ात ए यकता आप हैं

मुस्तफ़ा ए ज़ात ए यकता आप हैं

यक ने जिसको यक बनाया आप हैं

आप जैसा कोई हो सकता नहीं

अपनी हर ख़ूबी में तन्हा आप हैं

आब ओ गिल में नूर की पहली किरन

जान ए आदम जान ए हव्वा आप हैं

हुस्न ए अव्वल की नुमूद ए अव्वलीन

बज़्म ए आख़िर का उजाला आप हैं

ला मकां तक किसकी फैली रोशनी

वोह चराग़ ए आलम आरा आप हैं

है नमक जिस का ख़मीर ए हुस्न में

वोह मलीह ए हुस्न ए आरा आप हैं

ज़ैब ओ ज़ीन ए ख़ाक ओ फ़ख़्र ए ख़ाकियां

जीनत ए अर्शे मु'अल्ला आप हैं

नाज़िश ए अर्शो वक़ार ए अर्शियां

साहिब ए क़ौसैन ओ अदना आप हैं

आप की तल'अत ख़ुदा का आईना

जिस में चमके हक़ का जलवाह आप हैं

आप की रूयत है दीदार ए ख़ुदा

जलवाह गाह ए हक़ ता'अला आप हैं

आप को रब ने किया अपना हबीब

सारी ख़िलक़त का ख़ुलासा आप हैं

आप की ख़ातिर बनाए दो जहां

अपनी ख़ातिर जो बनाया आप हैं

जान तूई जानां क़रार ए जां तूई

जान ए जान जाने मसीहा आप हैं

पैकर ए हर शय में जान बन कर निहां

पर्दों पर्दों में हुवयदा आप हैं

आप से ख़ुद आप का साइल हूं मैं

जान ए जां मेरी तमन्ना आप हैं

आप की तल'अत को देखा जान दी

क़ब्र में पंहुचा तो देखा आप हैं

बर्र दरत आमद गदा बहर ए सवाल

हो भला अख़्तर को दाता आप हैं.

04. वज्ह ए निशात ए ज़िंदगी राहत ए जान तुम ही तो हो

वज्ह ए निशात ए ज़िंदगी राहत ए जान तुम ही तो हो

रूह ए रवां ए ज़िंदगी जान ए जहां तुम ही तो हो

तुम जो ना थे तो कुछ न था तुम जो ना हो तो कुछ ना हो

जान ए जहां तुम ही तो हो जान ए जिनां तुम ही तो हो

ताज ए वक़ार ए ख़ाकियां नाज़िश ए अर्शो अर्शियां

फ़ख़्र ए ज़मीन ओ आसमां फ़ख़्र ए ज़मां तुम ही तो हो

किस से करूं बयान ए ग़म कौन सुने फ़ुग़ान ए ग़म

पाऊं कहां अमान ए ग़म अम्न ओ अमां तुम ही तो हो

रूह ए रवान ए ज़िंदगी ताब ओ तवान ए ज़िंदगी

अम्न ओ अमान ए ज़िंदगी शाह ए शहां तुम ही तो हो

तुम हो चराग़ ए ज़िंदगी तुम हो जहां की रोशनी

मेहर ओ माह ओ नुजूम में जलवा कुनां तुम ही तो हो

तुम से जहान ए रंग ओ बू तुम हो चमन की आबरू

जान ए बहार ए गुलिस्तां सरव ए चमां तुम ही तो हो

तुम हो क़वाम ए ज़िंदगी तुम से है ज़िंदगी बनी

तुम से कहे है ज़िंदगी रूह ए रवां तुम ही तो हो

अस्ल ए शजर में हो तुम ही नख़्ल ओ समर में हो तुम ही

उन में अयां तुम ही तो हो उन में नुमां तुम ही तो हो

तुम हो नुमूद ए अव्वलीन शम ए अबद भी हो तुम ही

शाह ए ज़मन यहां वहां सिक्काह निशां तुम ही तो हो

अख़्तर की है मजाल क्या महशर में सब हैं दम ब-ख़ुद

सब की नज़र तुम ही पे है सब की ज़ुबां तुम ही तो हो.

05. काश गुम्बद ए ख़ज़रा देखने को मिल जाता

दाग़ ए फ़ुरक़त ए तैबाह क़ल्ब ओ मुज़्माहिल जाता

काश गुम्बद ए ख़ज़रा देखने को मिल जाता

मेरा दम निकल जाता उनके आस्ताने पर

उन के आस्ताने की ख़ाक़ में मैं मिल जाता

मेरे दिल से धुल जाता दाग़ ए फ़ुरकत ए तैबाह

तैबाह में फ़ना हो कर तैबाह में ही मिल जाता

मौत लेके आ जाती ज़िंदगी मदीने में

मौत से गले मिल कर ज़िंदगी में मिल जाता

ख़ुल्द ए दार ए तैबाह का इस तरह सफ़र होता

पीछे पीछे सर जाता आगे आगे दिल जाता

दिल पे जब किरन पड़ती उनके सब्ज़ गुम्बद की

उनकी सब्ज़ रंगत से बाग़ बन के खिल जाता

फ़ुरक़त ए मदीना ने वो दिए मुझे सदमें

कोह पर अगर पड़ते कोह भी तो हिल जाता

दिल मेरा बिछा होता उनके राह गुज़ारों में

उनके नक़्श ए पा से यूं मिल के मुस्तक़िल जाता

दिल पे वोह क़दम रखते नक़्श ए पा ये दिल बनता

या तो ख़ाक ए पा बन कर पा से मुत्तसिल जाता

वोह ख़िराम फ़रमाते मेरे दीदह ओ दिल पर

दीदह में फ़िदा करता सदक़े मेरा दिल जाता

चश्म ए तर वहां बेहती दिल का मुद्द'आ केहती

आह बा अदब रेहती मुंह मेरा सिल जाता

दर पे दिल झुका होता इज़्न पा के फिर बढ़ता

हर गुनाह याद आता दिल ख़ाजिल ख़जिल जाता

मेरे दिल में बस जाता जलवा ज़ार ए तैबाह का

दाग़ ए फुरकत ए तैबाह फूल बन के खिल जाता

उनके दर पे अख़्तर की हसरतें हुवि पूरी

साइल ए दर ए अक़दस कैसे मुनफ़ा'अल जाता.

"जब हस्सान बिन साबित (रदी अल्लाहू अन्हु) नात शरीफ़ पढ़ते

तो आक़ा ﷺ उनके लिए जिब्रिल (अलैहिस्सलाम) की मदद की दुआ करते."

*

[सुनन निसाई जिल्द 1 हदीस 719]

06. सब मदीने चलें

तुम चलो हम चलें सब मदीने चलें

जानिब ए तैबाह सब के सफ़ीने चलें

मयकशों ! आओ आओ मदीने चलें

बादा ए ख़ुल्द के जाम पीने चलें

जी गए वो जो मदीने में जो मर गए

आओ हम भी वहां मर के जीने चलें

ज़िंदगी अब सिर ए ज़िंदगी आ गई

आख़री वक़्त है अब मदीने चलें

शौक़ ए तैबाह ने जिस दम सहारा दिया

चल दिए हम कहा बेकसी ने चलें

ताईर ए जां मदीने को जब उड़ चला

ज़िंदगी से कहा ज़िंदगी ने चलें

जान ए नौ राह ए जानां में यूं मिल गई

आंख नीची कहा बेख़ुदी ने चलें

राह ए तैबाह में जब नातवां रह गए

दिल को खींचा कहा बेकली ने चलें

ख़ाक ए तैबाह में अपनी जगह हो गई

ख़ूब मुज़दाह सुनाया ख़ुशी ने चलें

बेतकल्लुफ़ शाह ए दो जहां चल दिए

सादगी से कहा जब किसी ने चलें

अगले पिछले सभी ख़ुल्द में चल दिए

रोज़ ए महशर कहा जब नबी ने चलें

उनकी शान ए करम की कशिश देखना

कासाह लेकर कहा ख़ुसरवी ने चलें

अख़्तर ए ख़स्ता भी ख़ुल्द में चल दिया

जब सदा दी उसे मुर्शीदी ने चलें

07. वोह उबला चश्मा शरबत का

लब ए कौसर है मेला तिशनाह कामान ए मोहब्बत का

वोह उबला दस्त ए साक़ी से वोह उबला चश्मा शरबत का

ये आलम अम्बिया पर उनके सरवर की इनायत का

जिसे देखो लिए जाता है परवानाह शफ़ाअत का

पिला दे अपनी नज़रों से छलकता जाम रुयत का

शाह ए कौसर तराहेम तिशनाह जाता है ज़ियारत का

वही जो रहमत तुल लिल'आलमीन हैं जान ए आलम हैं

बड़ा भाई कहे उनको कोई अंधा बसीरत का

मह ओ ख़ुर्शीद ओ अंजुम में चमक अपनी नहीं कुछ भी

उजाला है हक़ीक़त में उन्हीं की पाक तल'अत का

भटका यूं फिरे कब तक तुम्हारा अख़्तर ए ख़स्ता

दिखा दो रास्ता इस को ख़ुदारा शहर ए उल्फ़त का.

08 हमें अब देखना है हौसलाह ख़ुर्शीद ए महशर का

वोह बढ़ता साया ए रहमत चला ज़ुल्फ ए मुअम्बर का

हमें अब देखना है हौसलाह ख़ुर्शीद ए महशर का

जो बे परदाह नज़र आ जाए जलवाह रू ए अनवर का

ज़रा सा मुंह निकल आए अभी ख़ुर्शीद ए ख़ावर का

शहे कौसर तराहम तिशना ए दीदार जाता है

नज़र का जाम दे परदाह रुख़ ए पुर नूर से सर का

अदब गाहिश्त जेर ए आसमां अज़ अर्श नाज़ुक तर

यहां आते हैं यूं अर्शी के आवाजाह नहीं पर का

हमारी सम्त वोह मेहर ए मदिनाह मेहरबां आया

अभी खुल जायेगा सब हौसला ख़ुर्शीद ए महशर का

चमक सकता है तो चमके मक़ाबिल उनकी तल'अत के

हमें भी देखना है हौसला ख़ुर्शीद ए महशर का

रवां हो सल सबील ए इश्क ए सरवर मेरे सीने में

न हो नार का कुछ ग़म ना डर ख़ुर्शीद ए महशर का

तेरा ज़र्रा वो है जिस ने खिलाए अन गिनत तारे

तेरा क़तरा वो है जिस से मिला धारा समन्दर का

बताना था के नेचर उन के ज़ेर ए पा मुसख़्ख़र के

बना पत्थर में यूं नक़्श ए कफ़ ए पा मेरे सरवर का

वोह ज़ाहिर के भी हाकिम हैं वोह बातिन के भी सुल्तान हैं

निराला तौर ए सुल्तानी है शाहों के सिकन्दर का

ये सुन लें साया ए जिस्म ए पयम्बर ढूंढने वाले

बशर की शक्ल में दीगर है वोह पैकर पयम्बर का

वोह ज़िल्ल ए ज़ात ए रहमां हैं नबुव्वत के मह ए ताबां

ना ज़िल का ज़िल कहीं देखा ना साया माह ओ अख़्तर का.

09. ग़म ए हस्ती ने हमें ख़ून रुलाया होगा

जब कभी हम ने ग़म ए जानां को भुलाया होगा

ग़म ए हस्ती ने हमें ख़ून रुलाया होगा

दामन ए दिल जो सू ए यार खिंचा जाता है

हो ना हो उस ने मुझे आज बुलाया होगा

आंख उठा कर तो देख मेरे दिल की तरफ़

तेरी यादों का चमन दिल में सजाया होगा

गर्दिश ए दौर हमें छेड़ ना इतना वरना

अपने नालों से अभी हश्र उठाया होगा

डूब जाए ना कहीं ग़म में हमारे आ'लम

हम जो रो देंगे तो बहता हुआ दरिया होगा

सोचिए कितना हसीं होगा वो लहज़ा ए अख़्तर

सर बालीं पे दम ए मर्ग वो आया होगा.

10. तेरा आक़ा शहेंशाह ए कौनैन है

हर नज़र कांप उठेगी महशर के दिन ख़ौफ से हर कलेजा दहल जाएगा

पर ये नाज़ उनके बंदे का देखेंगे सब थाम कर उनका दामन मचल जायेगा

मौज कतरा के हमसे चली जायेगी रुख़ मुख़ालिफ़ हवा का बदल जाएगा

जब इशारा करेंगे वो ना'खुदा अपना बेड़ा भंवर से निकल जायेगा

यूं तो जीता हूं हुक्म ए ख़ुदा से मगर मेरे दिल की है उनको यक़ीनन ख़बर

हासिल ए ज़िंदगी होगा वो दिन मेरा उनके क़दमों पे जब दम निकल जाएगा

रब्बे सल्लिम वोह फ़रमाने वाले मिले क्यों सताते हैं ऐ दिल तुझे वसवसे

पुल से गुज़रेंगे हम वज्द करते हुवे कौन कहता है पांव फिसल जाएगा

अख़्तर ए खस्ता क्यों इतना बेचैन है तेरा आक़ा शहेंशाह ए कौनैन है

लौ लगा तो सही शाह ए लौलाक से ग़म मसर्रत से सांचे में ढल जाएगा.

11. बसद अदब पाए तस्लीम सर झुकाए फलक

झुके ना बार ए सद एहसान से क्यों बिनाए फ़लक

तुम्हारे ज़र्रे के पर तो सितार हाए फ़लक

ये ख़ाक ए कुचा ए जानां है जिसके बोसे को

ना जाने कब से तरसते हैं दीदहाए फ़लक

अफ़ ओ अज़मत ए ख़ाक ए मदिनाह क्या कहिए

उसी तुराब के सदक़े है ऐतदाये फ़लक

ये उनके जलवे की थीं गर्मियां शब ए असरा

ना लाए ताब ए नज़र बहके दीदहाए फ़लक

क़दम से उनके सर ए अर्श बिजलियां चमकीं

कभी थे बंद कभी वा थे दीदहाए फ़लक

मैं कम नसीब भी तेरी गली का कुत्ता हूं

निगाह ए लुत्फ़ इधर हो ना यूं सताए फ़लक

ये किस के दर से फिरा है तू नज्दी बे-दीन

बुरा हो तेरा तेये सर पे गिर ही जाए फ़लक

जो नाम ले शह ए अर्श ए बरीं का तू अख़्तर

बसद अदब पए तस्लीम सर झुकाए फ़लक.

12. मुनाजात की रात

आज की रात ज़ियाओं की है बारात की रात

फ़ज़्ल ए नौशाह ए दो आ'लम के बयानात की रात

शब ए मेअ'राज वोह आवहा के इशारात की रात

कौन समझाए वोह कैसी थी मुनाजात की रात

छाई रहती है ख़यालों में तुम्हारी ज़ुल्फ़ें

कोई मौसम हो यहां रहती है बरसात की रात

रिंद पीते हैं तेरी ज़ुल्फ के साए में सदा

कोई मौसम हो यहां रहती है बरसात की रात

रुख ए ताबां ए नबी ज़ुल्फ़ ए मुअम्बर पे फ़िदा

रोज़ ए ताबिंदा ये मस्ती भरी बरसात की रात

दिल का हर दाग़ चमकता है क़मर की सूरत

कितनी रौशन है रुख ए शाह के ख़यालात की रात

हर शब ए हिज्र लगी रहती है अश्कों की झड़ी

कोई मौसम हो यहां रहती है बरसात की रात

जिस की तन्हाई में वोह शाम ए शबिस्तानी हो

रश्क ए सद बज़्म है उस रिंद ख़राबात की बात

बुलबुल ए बाग़ ए मदिनाह को सुना दे अख़्तर

आज की शब है फ़रिश्तों से मुबाहात की रात.

13. कभी रहते वो इस घर में

तालातुम है ये कैसा आंसुओं का दीदाह ए तर में
ये कैसी मौजें आई हैं तमन्ना के समन्दर में

हुजूम ए शौक़ कैसा इंतज़ार ए कू ए दिलबर में
दिल ए शैदा समाता क्यों नहीं अब पहलू ओ बर में

तजस्सुस करवटें क्यों ले रहा है क़ल्ब ए मुज़्तर में
मदीनाह सामने है बस अभी पंहुचा मैं दम भर में

ये बहसें हो रही है मेरे दिल में पहलू ओ बर में
के देखें कौन पहुंचे आगे आगे शहर ए दिलबर में

मदीने तक पंहुच जाता कहां ताक़त भी ये पर में
ये सरवर का करम है है जो बुलबुल बाग़ ए सरवर में

मदीने की वोह मर्ग ए जांफ़ीज़ा गर है मुक़द्दर में
अमर हो जायेंगे मर के दयार ए रूह ए परवर में

जो तू ऐ ताइर ए जां काम लेता कुछ भी हिम्मत से

नज़र बन कर पंहुच जाते तजल्ली गाह ए सरवर में

उजाले में गुमे होते तजल्ली गाह ए सरवर के

नज़र से छुप के हम रहते तजल्ली गाह ए सरवर में

ना रखा मुझको तैबाह की क़फ़स में उस सितमगर ने

सितम कैसा हुआ बुलबुल पे ये क़ैद ए सितमगर में

सितम से अपनी मिट जाओगे तुम ख़ुद ऐ सितमगारों

सुनो हम कह रहे हैं बे ख़तर दौर ए सितमगर में

गुजरगाहों में उनकी मैं बिछाता दीदह ओ दिल को

क़दम से नक़्श बनते मेरे दिल में दीदह ए तर में

बनाते जलवा गाह ए नाज़ मेरे दीदह ओ दिल को

कभी रहते वो इस घर में कभी रहते वोह उस घर में

मदीने में रहें ख़ुद दूर इसको रोकने वाले

मदीने में ख़ुद अख़्तर है मदिनाह चश्म ए अख़्तर में.

14. तेरी चौखट पे जो सर अपना झुका जाते हैं

तेरी चौखट पे जो सर अपना झुका जाते हैं
हर बुलंदी को वही नीचा दिखा जाते हैं

सरफराज़ी ए अजल उनको मिला करती है
नख़वत ए सर जो तेरे दर पे मिटा जाते हैं

डूबे रहते हैं तेरी याद में शाम ओ सहर
डूबतों को वही साहिल से लगा जाते हैं

ऐ मसीहा तेरे बीमार हैं ऐसे बीमार
जहां भर का दुख दर्द मिटा जाते हैं

मरने वाले रुख़ ए ज़ेबा पे तेरे जान ए जहां
ऐश ए जावेद के असरार बता जाते हैं

आसमां तुझ से उठाए ना उठेंगे सुन ले
हिज्र के सदमें जो उश्शाक़ उठा जाते हैं

ज़िक्र ए सरकार भी क्या आग है जिस से सुन्नी

बैठे बैठे दिल ए नज्दी को जला जाते हैं

जिन को शीरनी ए मिलाद से घिन आती है

आंख के अंधे उन्हें कव्वा खिला जाते हैं

दश्त ए तैबाह में नहीं कील का खटता अख़्तर

नाजुक अनदाम वहां बरहना पा जाते हैं.

15. उनके दर की भीक अच्छी

बल हवास सुन सीम ओ ज़र की बंदगी अच्छी नहीं
उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं

सरवरी क्या चीज़ है उनके गदाई के हुज़ूर
उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं

उनकी चौखट चूम कर खेद कह रही है सरवरी
उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं

सरवरी खुद है भिखारन बंदगान ए शाह की
उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं

सरवरी पा कर भी कहते हैं गदायान ए हुज़ूर
उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं

ताज ख़ुद रा काश करदाह गुयद आइन
उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं

मुफ़्ती ए आज़म यके अज़ मर्दोमान ए मुस्तफ़ा
उस रज़ा ए मुस्तफ़ा से दुश्मनी अच्छी नहीं

हुज्जत उल इस्लाम ऐ हामिद रज़ा बाबा ए मान
तुम को बिन देखे हमारी ज़िंदगी अच्छी नहीं

ख़ाक़ ए तैबाह की तलब में ख़ाक़ हो ये ज़िंदगी
ख़ाक़ ए तैबाह अच्छी अपनी ज़िंदगी अच्छी नहीं

आरज़ूमंदान ए गुल कांटों से बचते हैं कहीं
ख़ार ए तैबाह से तेरी पहलू तहि अच्छी नहीं

दश्त ए तैबाह के फिदाई से जिनां का तज़्किरा
जो रुला दे खून ऐसी दिल लगी अच्छी नहीं

दश्त ए तैबाह छोड़ कर मैं सैर ए जन्नत को चलूं
रहने दीजिए शैख़ जी दीवानगी अच्छी नहीं

जो जूनून ए ख़ुल्द में कव्वों को दे बैठे धरम

ऐसे अंधे शैख़ जी की पैरवी अच्छी नहीं

अक़्ल चौपाइयों को दे बैठे हकीम ए थानवी

मैं ना कहता था की सोहबत देव की अच्छी नहीं

याद ए जानां में म'अज़ अल्लाह हस्ती की ख़बर

याद ए जानां में किसी से आगाही अच्छी नहीं

शाम ए हिजराह में हमें है जुस्तजू उस में

चौदहवीं के चांद तेरी चांदनी अच्छी नहीं

शौक़ ए तहज़ीब ए फिरंगी तोड़ डालो मो'मिनों

तीरगी अंजाम है ये रौशनी अच्छी नहीं

शाख़ ए गुल पर ही बनाएंगे अ'नादिल आशियां

बर्क से कह दो के हम से ज़िद तेरी अच्छी नहीं

जो पिया को भाए अख़्तर वोह सुहाना राग है

जिस से ना खुश हो पिया वोह रानगी अच्छी नहीं

16. कुछ करें अपने यार की बातें

कुछ करें अपने यार की बातें

कुछ दिल ए दाग़दार की बातें

हम तो दिल अपना दे ही बैठे हैं

अब ये क्या इख़्तियार की बातें

मैं भी गुज़रा हूं दौर ए उल्फ़त से

मत सुना मुझ को प्यार की बातें

अहले दिल ही यहां नहीं कोई

क्या करें हाल ए ज़ार की बातें

पी के जाम ए मोहब्बत ए जानां

अल्लाह अल्लाह ख़ुमार की बातें

मर ना जाना मत'आ ए दुनिया पर

सुन के तू मालदार की बातें

यूं ना होते असीर ए ज़िल्लत तुम

सुनते गर होशियार की बातें

हर घड़ी वज्द में अरे अख़्तर

कीजिए उस दयार की बातें.

17. जो उन की तरफ़ मेरी चश्म ए इल्तेफ़ात नहीं

जो उन की तरफ़ मेरी चश्म ए इल्तेफ़ात नहीं

कोई उन से कहे चैन सारी रात नहीं

बाजुज़ निगाह ए करम को तो कुछ नहीं मांगा

बिगड़ते क्यों हो बिगड़ने की की बात नहीं

बोहोत हैं जीने के अंदाज़ पर मेरे हमदम

मज़ा ना हो जो ख़ुदी का तो कुछ हयात नहीं

बा-वक़्त ए नज़'आ यां ललचा के देखता क्या है

ये दार ए फ़ानी है राही इसे सबात नहीं

उठो जो अख़्तर ए ख़स्ता जहां से क्या ग़म है

मुझे बताओ अज़ीज़ों किसे ममात नहीं.

18. क़सम ख़ुदा की शहा कामयाब हो जाऊं

तुम्हारे दर पे जो मैं बारियाब हो जाऊं
क़सम ख़ुदा की शहा कामयाब हो जाऊं

जो पाऊं बोसा ए पा ए हुज़ूर क्या कहना
मैं ज़र्रा शम्स ओ क़मर का जवाब हो जाऊं

मेरी हक़ीक़त ए फ़ानी भी कुछ हक़ीक़त है
मरूं तो आज ख़याल और ख़्वाब हो जाऊं

जहां के क़ौस ए क़ज़ाह से फ़रेब खाए क्यों
मैं अपने क़ल्ब ओ नज़र का हिजाब हो जाऊं

जहां की बिगड़ी उसी आस्तां पर बनती है
मैं क्यों ना वक़्फ़ ए दर ए आं जनाब हो जाऊं

तुम्हारा नाम लिया है तलातुम ए ग़म में
मैं अब तो पार रिसालत मा'अब हो जाऊं

ये मेरी दूरी बदल जाए क़ुर्ब से अख़्तर

अगर वोह चाहें तो मैं बारियाब हो जाऊं.

19. लब ए जां बख़्श का सदक़ा दे दो

लब ए जां बख़्श का ऐ जां मुझे सदक़ा दे दो

मुश्दाह ए ऐश ए अबद जान ए मसीहा दे दो

ग़म ए हस्ती का मदावा मेरे मौला दे दो

बदाह ए ख़ास का एक जाम छलकता दे दो

ग़र्क़ होती हुई नांव को सहारा दे दो

मौज थम जाए ख़ुदारा ये इशारा दे दो

हम गुनाहगार सही हज़रत ए रिज़वां लेकिन

उन के बंदे हैं जिनां हक़ है हमारा दे दो

तपिश ए महर ए क़यामत को सहें हम कैसे

अपने दामान ए करम का हमें साया दे दो

भूल जाए जिसे पी कर ग़म ए दौरां अख़्तर

साकी ए कौसर ओ तस्नीम वोह सहबा दे दो.

20. अपने दर पे बुलाओ तो बहुत अच्छा हो

गर्दिश ए दौर ने पामाल किया मुझ को हुज़ूर

अपने क़दमों में सुलाओ तो बहुत अच्छा हो

यूं तो कहलाता हूं बंदा मैं तुम्हारा लेकिन

अपना कह के जो बुलाओ तो बहुत अच्छा हो

ग़म ए पयहम से ये बस्ती मेरी वीरान हुई

दिल में अब ख़ुद को बसाओ तो बहुत अच्छा हो

क़ैफ़ उस बादह ए गुलनार से मिलता ही नहीं

अपनी आंखों से पिलाओ तो बहुत अच्छा हो

तुम तो मुर्दों को जिला देते हो मेरे आक़ा

मेरे दिल को भी जिलाओ तो बहुत अच्छा हो

जिस ने शर्मिंदा किया मेहर ओ माह ओ अंजुमन को

एक झलक फिर वो दिखाओ तो बहुत अच्छा हो

रो चुका यूं तो मैं औरों के लिए ख़ूब मगर

अपनी उल्फ़त में रुलाओ तो बहुत अच्छा हो

यूं ना अख़्तर को फिराओ मेरे मौला दर दर

अपनी चौखट पे बिठाओ तो बहुत अच्छा हो.

21. दर ए जानां पे फ़िदाई को अजल आई हो

दर ए जानां पे फ़िदाई को अजल आई हो
ज़िंदगी आके जनाज़े पे तमाशाई हो

तेरी सूरत जो तसव्वुर में उतर आई हो
फिर तो ख़लवत में अजब अंजुमन आराई हो

नेक सा'अत से अजल ऐश ए अबद लाई हो
दर ए जानां पे कोई महव ए जबीन लाई हो

संग ए दर पर तेरे यूं नसेहा फ़रसाई हो
ख़ुद को भूला हुआ जाना तेरा शैदाई हो

ख़ुद बख़ुद ख़ुल्द वहां खींच के चली आई हो
दश्त ए तैबाह में जहां बादेयाह ए पयमाई हो

मौसम ए मय हो वो गेसू की घटा छाई हो
चश्म ए मैगुं से पिएं जलसा ए सहबाई हो

चांदनी रात में फिर मय का वो एक दौर चले

बज़्म ए अफ़लाक को भी हसरत ए मय आई हो

उनके दीवाने खुली बात कहां करते हैं

बात समझे वही जो साहिब ए दानाई हो

मेहर ए ख़ावर पे जमाए नहीं जमती नज़रें

वोह अगर जलवा करें कौन तमाशाई हो

दश्त ए तैबाह में चलूं चल के गिरूं गिर के चलूं

नातवानी मेरी सद रश्क ए तवानाई हो

गुल हो जब अख़्तर ए ख़स्ता का चराग़ ए हस्ती

इसकी आंखों में तेरा जलवा ए ज़ैबाई हो.

22. ज़हे अज़मतो ओ इफ़्तेख़ार ए मदीनाह

वोह छाई घटा बादा बार ए मदीनाह

पिए झूम कर जां निसार ए मदीनाह

वोह चमका वोह चमका मिनार ए मदीनाह

क़रीब आ रहा है दयार ए मदीनाह

नहां लें गुनाह गार अब्र ए करम में

उठा देखिए वोह ग़ुबार ए मदीनाह

ख़ुदा याद फ़रमाए सौगंद ए तैबाह

ज़हे अज़मतो ओ इफ़्तेख़ार ए मदीनाह

अगर देखे रिज़वां चमन ज़ार ए तैबाह

कहे देख कर यूं वोह ख़ार ए मदीनाह

मदीने के कांटे भी सद रश्क ए गुल है

अजब रंग पर है बहार ए मदीनाह

नहीं जचती जन्नत भी नज़रों में उन की

जिन्हें भा गया ख़ार ए ज़ार ए मदीनाह

मेरी जान से भी वोह नज़दीक तर हैं

वो मौलाई हर बे क़रार ए मदीनाह

करूं क्या फ़िक्र मैं ग़म ए ज़िंदगी की

मैं हूं बंदाह ए ग़म गुसार ए मदीनाह

चला दौर ए साग़र मय नाब छलकी

रहे तिशनाह क्यों बादा ख़्वार ए मदीनाह

चला कौन ख़ुशबू लुटाता के अब तक

है महकी हुई रह गुज़ार ए मदीनाह

सहर दिन है और शाम ए तैबाह सहर है

अनोखे हैं लैल ओ नहार ए मदीनाह

बुला अख़्तर ए ख़स्ता हाल को भी दर पर

मैं सदक़े तेरे शहर ए यार ए मदीनाह.

23. नारा ए रिसालत

सद्र ए बज़्म ए कसरत या रसूल अल्लाह

राज़ दार ए वहदत या रसूल अल्लाह

हर जहां की रहमत या रसूल अल्लाह

बेहतरीन ख़िलक़त या रसूल अल्लाह

नारा ए रिसालत या रसूल अल्लाह

मेहव ए ख़्वाब ए गफ़लत या रसूल अल्लाह

हो गई उम्मत या रसूल अल्लाह

सोया बख़्त ए मिल्लत या रसूल अल्लाह

किजीए इनायत या रसूल अल्लाह

नारा ए रिसालत या रसूल अल्लाह

साहिब ए हिदायत या रसूल अल्लाह

छाया अब्र ए ज़ुलमत या रसूल अल्लाह

नातवां है उम्मत या रसूल अल्लाह

किजीए हिमायत या रसूल अल्लाह

नारा ए रिसालत या रसूल अल्लाह

दर पये शरारत या रसूल अल्लाह

कुफ़्र की जमा'अत या रसूल अल्लाह

नातवां है उम्मत या रसूल अल्लाह

किजीए हिमायत या रसूल अल्लाह

नारा ए रिसालत या रसूल अल्लाह

मालिक ए शफ़ा'अत या रसूल अल्लाह

बेकसों की ताक़त या रसूल अल्लाह

मेज़बान ए उम्मत या रसूल अल्लाह

एक जाम ए शरबत या रसूल अल्लाह

नारा ए रिसालत या रसूल अल्लाह

आप की अता'अत या रसूल अल्लाह

ख़ुदा की ता'अत या रसूल अल्लाह

जिस को हो बसीरत या रसूल अल्लाह

देखो शान ए क़ुरबत या रसूल अल्लाह

नारा ए रिसालत या रसूल अल्लाह

दीद के हों तालिब जब ख़ुदा से मूसा

उन से लन तरानी कह दे रब तुम्हारा

पर तुम्हारे रब से तुम को मेरे मौला

है पयाम ए वस्लत या रसूल अल्लाह

नारा ए रिसालत या रसूल अल्लाह

करना था ख़ुदा को हम पे आशकारा

आख़री नबी है उसको सबसे प्यारा

कोई भी नबी हो पिछली उम्मतों का

तुम को सब पे सबक़त या रसूल अल्लाह

नारा ए रिसालत या रसूल अल्लाह

तुम को जो बताए अपने जैसा इनसां

कौर ए चश्म है वो दो जहां के सुल्तां

देव का है बंदा वोह अदू ए रहमां

जिस को तुम से नफ़रत या रसूल अल्लाह

नारा ए रिसालत या रसूल अल्लाह

तुम हो नूर ए यज़्दां शम'आ ए बज़्म ए इमकां

तुम हो वज्ह ए हर शै दहर की रग ए जां

तुम से कोह ओ सहरा तुम से ये गुलिस्तां

तुम बक़ा ए ख़िलक़त या रसूल अल्लाह

नारा ए रिसालत या रसूल अल्लाह

दहर में है क्या शै तुम से जो निहां है

तुम पर हाल ए अख़्तर बिलयक़ीन अयां

बस मेरी ख़मोशी ही मेरी ज़ुबां है

क्या करूं शिकायत या रसूल अल्लाह

नारा ए रिसालत या रसूल अल्लाह.

24. मौत बेहतर है ऐसे जीने से

दूर ए दिल रहें मदीने से

मौत बेहतर है ऐसे जीने से

उन से मेरा सलाम कह देना

जा के तू ए सबा क़रीने से

हर गुल ए गुलिस्तां मुअ'त्तर है

जान ए गुलज़ार के पसीने से

यूं चमकते हैं ज़र्रे तैबाह के

जैसे बिखरे हुए नगीने से

ज़िक्र ए सरकार करते हैं मो 'मिन

कोई मर जाए जल के कीने से

बारगाह ए ख़ुदा में क्या पहोंचे

गिर गया जो नबी के ज़ीने से

पीजिए चश्म ए नाज़ से उन की

मयकशों का भला है पीने में

उस तजल्ली के सामने अख़्तर

गुल को आने लगे पसीने से.

25. सबा ये कैसी चली आज दश्त ए बत'हा से

सबा ये कैसी चली आज दश्त ए बत'हा से
उमंग शौक़ की उठी है कल्ब ए मुर्दाह से

ना बात मुझ से गुल ए ख़ुल्द की कर ऐ ज़ाहिद
के मेरा दिल है निगार ख़ार ए ज़ार ए तैबाह से

ये बात मुझ से मेरे दिल की कह गया ज़ाहिद
बहार ए ख़ुल्द ए बरीं है बहार ए तैबाह से

ये किस के दम से मिली है जहां को ताबानी
माह ओ नुजूम हैं रौशन मिनार ए तैबाह से

फ़िदाईयों को ये ज़िद क्या के पर्दाह उठ जाए
हज़ार जलवे नुमायां हिजाब ए आक़ा से

जो है मरीज़ ए मोहब्बत यहां चले आएं
सदा ये आती है सुन लो मज़ार ए मौला से

किनारा हो गया पैदा उसी जगह फ़ौरन

कभी जो हम ने पुकारा मेयान ए दर्या से

ना फ़ैज़ ए राह ए मोहब्बत में तू ने कुछ पाया

किनारा क्यों नहीं करता तू अहले दुनिया से

पस ए ममात ना बदनाम हो तेरा अख़्तर

इलाही इसको बचा लेना त'अन ए आ'दा से.

26. सदक़े जाऊं मैं अनीस ए शबे तन्हाई के

मेरी ख़लवत में मज़े अंजुमन आराई के
सदक़े जाऊं में अनीस ए शबे तन्हाई के

उन के सदक़े में मिला मोल अनोखा मुझ को
हो गए दोनो जहां आप के शैदाई के

सर है सज्दे में ख़याल ए रुख़ ए जानां दिल में
हम को आते हैं मज़े नासेयाह फ़रसाई के

सज्दाह बे उल्फ़त ए सरकार अ'बस ऐ नज्दी
महर ए ला'नत हैं ये सब दाग़ जबीं साई के

दश्त ए तैबाह में गुमा दे मुझे ऐ जोश ए जुनूं
ख़ूब लेने दे मज़े बादिआह पैमायी के

वो रग ए जान ए दो आ'लम हैं बड़े भाई नहीं
हैं ये सब फंदे बुरे तेरे बड़े भाई के

मैं तो हूं बुलबुल ए बुस्तान ए मदीनाह अख़्तर

हौसलें मुझ को नहीं क़ाफ़ियाह आराई के.

27. मदीनाह आने वाला है

संभल जा ऐ दिल ए मुज़्तर मदीनाह आने वाला है
लूटा ऐ चश्म ए तर ए गौहर मदीनाह आने वाला है

क़दम बन जाएं मेरा सर मदीनाह आने वाला है
बिछूं राह में नज़र बन कर मदीनाह आने वाला है

जो देखे उन का नक़्श ए पा ख़ुदा से वोह नज़र मांगू
चराग़ ए दिल चलूं लेकर मदीनाह आने वाला है

करम उन का चला यूं दिल से कहता राह ए तैबाह में
दिल ए मुज़्तर तसल्ली कर मदीनाह आने वाला है

निछावर हैं मदीने की ये मेरा दिल ये मेरी आंखें
निछावर हूं मदीने पर मदीनाह आने वाला है

इलाही में तलब गार ए फ़ना हूं ख़ाक़ ए तैबाह में
इलाही कर निसार ए दर मदीनाह आने वाला है

मदीने को चला मैं बे नियाज़ ए रहबर ए मंज़िल

राह ए तैबाह है ख़ुद रहबर मदीनाह आने वाला है

मुझे खिंचे लिए जाता है शौक़ ए कूचा ए जानां

खिंचा जाता हूं मैं यकसर मदीनाह आने वाला है

वोह चमका गुम्बद ए ख़जरा वोह शहर ए पुर ज़िया आया

ढाले अब नूर में पैकर मदीनाह आने वाला है

जहां से बेख़बर हो कर चलो ख़ुल्द ए मदीनाह में

चलो अब होश की पी कर मदीनाह आने वाला है

मदीने में खुले बाब ए हयात ए नौ बा तर्ज़ ए नौ

बदल डालो कुहन दफ़्तार मदीनाह आने वाला है

ज़रा ऐ मरकब ए उम्र ए रवां चल बर्क़ की सुरत

दिखा परवाज़ के जौहर मदीनाह आने वाला है

तलब गार ए मदीनाह तक मदीनाह ख़ुल्द ही आ जाए

तू दुनिया से किनाराह कर मदीनाह आने वाला है

मदीनाह आ गया अब देर क्या है सिर्फ़ इतनी सी

तू खाली कर ये दिल का घर मदीनाह आने वाला है

फ़लक शायद ज़मीं पर रह गया ख़ाक ए गुज़र बन कर

बिछे हैं राह में अख़्तर मदीनाह आने वाला है

फ़िज़ाएं महकी महकी हैं हवाएं भीनी भीनी हैं

बसी है कैसी मुश्क ए तर मदीनाह आने वाला है

क़मर आया है शायद उनके तलवों की ज़िया लेने

बिछा है चांद का बिस्तर मदीनाह आने वाला है

मुहम्मद के गदा कुछ फ़र्श वाले ही नहीं देखो

वोह आता है शाह ए ख़्वार मदीनाह आने वाला है

ग़ुबार ए राह ए अनवर किस क़दर पुर नूर है अख़्तर

तानी है नूर की चादर मदीनाह आने वाला है.

28. बादा ए इश्क़ ए मुस्तफ़ा

पी के जो मस्त हो गया बादह ए इश्क़ ए मुस्तफ़ा
उस की ख़ुदाई हो गई और वो ख़ुदा का हो गया

कह दिया क़ासिम उन अना दोनों जहां के शाह ने
या'नी दर ए हुज़ूर पे बंटती है नेअ'मत ए ख़ुदा

अ'रसा ए हश्र में खुली उनकी वोह ज़ुल्फ ए अंबरीं
मिनाह वो झूम कर गिरा छाई वोह देखिए घटा

गर्दिश ए चश्म ए नाज़ में सदक़े तेरे ये कह तो दे
ले चलो इस को ख़ुल्द में ये तो हमारा हो गया

(है ये सफ़ीना ए निजात इसमें थी मेरी क्या बिसात
अख़्तर यूं ही अ'ता करे सय्यद वसी पढ़े सलाम)

29. सरकार ए दो'आलम ﷺ की मुहब्बत

निहां जिस दिल में सरकार ए दो'आलम की मुहब्बत है
वोही ख़लवत ख़ाना ए मौला है वोह दिल रश्क ए जन्नत है

ख़लाइक़ पर हुई रौशन अज़ल से ये हक़ीक़त है
दो'आलम में तुम्हारी सल्तनत है बादशाहत है

ख़ुदा ने याद फ़रमाई क़सम ख़ाक़ ए कफ़ ए पा की
हुआ मा'लूम तैबाह की दो'आलम पर फ़ज़िलत है

सिवाए मेरे आक़ा के सभी से रिश्ते है फ़ानी
वोह क़िस्मत का सिकंदर है जिसे आक़ा से निस्बत है

यही कहती है रिंदों से निगाह ए मस्त साक़ी की
दर ए मयख़ाना वा है मयकशों की आ'म दावत है

ग़म ए शाह ए दाना में मरने वाले तेरा क्या कहना
तुझे ला तहज़नू की तेरे मौला से बशारत है

उठे शोर ए मुबारकबाद उन से जा मिला अख़्तर

ग़म ए जहां में किस दर्जाह हसीं अंजाम ए फ़ुरकत है.

30. मस्त में अलस्त है

मस्त मय अलस्त है वोह बादशाह ए वक़्त है

बंदा ए दर जो है तेरा वोह बेनियाज़ बख़्त है

सल्ले अ'ला मुहम्मदिन सल्ले अ'ला मुहम्मदिन

उन की गदाई के तुफ़ैल हम को मिली सिकंदरी

रंग ये लाई बंदगी औज पे अपना बख़्त है

सल्ले अ'ला मुहम्मदिन सल्ले अ'ला मुहम्मदिन

गर्दिश ए दौर या नबी वीरान दिल को कर गई

ताब ना मुझ में अब रही दिल मेरा लख़्त लख़्त है

सल्ले अ'ला मुहम्मदिन सल्ले अ'ला मुहम्मदिन

ग़ुंचा ए दिल खिलाइए जलवाह ए रुख़ दिखाइए

जाम ए नज़र पिलाइए तिशनगी मुझ को सख़्त है

सल्ले अ'ला मुहम्मदिन सल्ले अ'ला मुहम्मदिन

अख़्तर ए ख़स्ता तैबाह को सब चले तुम भी अब चलो

जज़्ब से दिल के काम लो उठो के वक़्त रफ़्त है

सल्ले अ'ला मुहम्मदिन सल्ले अ'ला मुहम्मदिन.

31. जान ए बहारा

शहंशाह ए दो आ'लम का करम है

मेरे दिल को मयस्सर उन का ग़म है

यहीं रहते हैं वोह जान ए बहारां

ये दुनिया दिल की रश्क ए सद इरम है

भला दावे हैं उन से हम सारी के

सर ए अ'र्श ए बरीं जिन का क़दम है

ये दरबार ए नबी है जिस के आगे

ना जाने अ'र्श ए आ'ज़म कब से ख़म है

तरस खाओ मेरी तिशनह लबी पर

बढ़ेगी और बेताबी सितम है

यहां क़ाबू में रख दिल को अख़्तर

ये दरबार ए शाह ए उमम है.

32. तारों की अंजुमन में ये बात हो रही है

तारों की अंजुमन में ये बात हो रही है
मरकज़ तजल्लियों का ख़ाक़ ए दर ए नबी है

ज़र्रे यह कह रहें हैं इस नूर के क़दम से
ये आब ओ ताब लेकर हम ने जहां को दी है

यकता हैं जिस तरह वोह है उनका ग़म भी यकता
ख़ुश हूं की मुझ को दौलत अनमोल मिल गई है

फिर क्यूं कहूं परेशान हो कर बा क़ौल शखसे
यकता के ग़म में अब भी बे कैफ़ ज़िंदगी है.

33. एक बिजली चमक रही है

वोही तबस्सुम वोही तरन्नुम वही नज़ाकत वही लताफ़त
वोही दुज़ दीदाह सी निगाहें के जिस से शौख़ी टपक रही है

गुलों की खुशबू महक रही है दिलों की कलियां चटक रही है
निगाहें उठ उठ के झुक रही हैं के एक बिजली चमक रही है

ये मुझ से कहती है दिल की धड़कन के दस्त ए साक़ी से जाम ले ले
वोह दौर साग़र का चल रहा है शराब ए रंगीं छलक रही है

ये मैंने माना हसीन ओ दिलकश समां ये मस्ती भरा है लेकिन
ख़ुशी में हाइल है फ़िक्र ए फ़रदा मुझे ये मस्ती खटक रही है

ना जाने कितने फ़रेब खाए राह ए उल्फ़त में हम ने अख़्तर
पर अपनी मत को भी क्या करें फ़रेब खा कर बहक रही है.

34. ऐ नसीम ए कू ए जानां

तेरे दामन ए करम में जिसे नींद आ गई है
जो फ़ना ना होगी ऐसी उसे ज़िंदगी मिली है

मुझे क्या पड़ी किसी से करूं अ'र्ज़ मुद्द'आ मैं
मेरी लौ तो बस उन्हीं के दर ए जूद से लगी है

वोह जहान भर के दाता मुझे फेर देंगे ख़ाली
मेरी तौबा ऐ ख़ुदा ! ये मेरे नफ़्स की बदी है

जो पा ए सवाल आए मुझे देख कर ये बोले
इसे चैन से सुलाओ के ये बंदा ए नबी है

मैं मरूं तो मेरे मौला ये मलाइका से कह दें
कोई इस को मत जगाना अभी आंख लग गई है

मैं गुनाह गार हूं और बड़े मरतबों की ख़्वाहिश
तू मगर करीम है ख़ू तेरी बंदा परवरी है

तेरी याद थपकी दे कर मुझे अब शहा सुला दे

मुझे जागते हुए यूं बड़ी देर हो गई है

ऐ नसीम ए कू ए जाना ज़रा सू ए बद नसीबां

चली आ खुली है तुझ पे जो हमारी बेकसी है

तेरे दिल शिकस्ताह अख़्तर इसी इंतज़ार में है

के अभी नवीद ए वस्लत तेरे दर से आ रही है.

35. फ़ुरक़त ए तैबाह की वहशत दिल से जाए ख़ैर से

फ़ुरक़त ए तैबाह की वहशत दिल से जाए ख़ैर से
मैं मदीने को चलूं वो दिन फिर से आए ख़ैर से

दिल में हसरत कोई बाक़ी रह ना जाए ख़ैर से
राह ए तैबाह में मुझे यूं मौत आए ख़ैर से

मेरे दिन फिर जाएं या रब ! शब वोह आए ख़ैर से
दिल में जब माह ए मदीनाह घर बनाए ख़ैर से

रात मेरी दिन बने उन की लिक़ा ए ख़ैर से
क़ब्र में जब उन की तल'अत जगमगाए ख़ैर से

हैं ग़नी के दर पे हम बिस्तर जमाए ख़ैर से
ख़ैर के तालिब कहां जाएंगे जा ए ख़ैर से

वोह ख़िराम ए नाज़ फ़रमाएं जो पाए ख़ैर से

क्या बयां वोह ज़िंदगी हो दिल जो पाए ख़ैर से

मर के भी दिल से ना जाए उल्फ़त ए बाग़ ए नबी

ख़ुल्द में भी बाग़ ए जानां याद आए ख़ैर से

रंज ओ ग़म हूं बेनिशां आए बहार ए बेख़िज़ां

मेरे दिल में बाग़ ए जानां की हवा ए ख़ैर से

इस तरफ़ भी दो क़दम जलवे ख़िराम ए नाज़ के

रह गुज़र में हम भी हैं आंखें बिछाए ख़ैर से

इंतज़ार उन से कहे है बज़ुबान ए चश्म ए नम

कब मदीनाह में चलूं कब तू बुलाए ख़ैर से

शाम ए तन्हाई बने रश्क ए हज़ारां अंजुमन

याद ए जानां दिल में यूं धूमें मचाए ख़ैर से

फ़ुरक़त ए तैबाह के हाथों जीते जी मुर्दा हुए

मौत या रब हम को तैबाह में जिलाए ख़ैर से

हो मुझे सैर ए गुलिस्तान ए मदीनाह यूं नसीब

मैं बहारों में चलूं ख़ुद को गुमाए ख़ैर से

ज़िंदाबाद ए आरज़ू ए बाग़ ए तैबाह ज़िंदाबाद

तेरे दम से हैं ज़माने के सताए ख़ैर से

नज्दियों की चिराह दस्ती या इलाही ! ताबाके

ये बलाए नज्दियाह तैबाह से जाए ख़ैर से

झांक लो आंखों में उन की हसरत ए तैबाह लिए

ज़ाईर ए तैबाह ज़िया ए तैबाह लाए ख़ैर से

है ये तैबाह का पयाम ए तालिब ए ऐ'श ए दवाम

जन्नत ए तैबाह में आ हस्ती मिटाए ख़ैर से

संग ए दर से आ मिले तैबाह में अब तो जा मिले

आ गए दर पे तीरे तेरे बुलाए गए ख़ैर से

गोश बर आवाज़ हो क़ुदसी भी उस के गीत पर

बाग़ ए तैबाह में जब अख़्तर गुनगुनाए ख़ैर से.

36. सामान ए इ'शरत कीजिए

अपने रिंदो की ज़ियाफ़त कीजिए

जाम ए नज़्जाराह इ'नायत कीजिए

साक़ी ए कौसर दुहाई आप की

सोख़ता जानों पे रहमत कीजिए

दीजिए मेरी मोहब्बत को हवा

इस तरफ़ चश्म ए मोहब्बत कीजिए

क़ैद ए ग़म में ख़ुश रहूं मैं उम्र भर

यूं गिरफ़्तार ए मोहब्बत कीजिए

ख़ुद को भूलुं आप की उल्फ़त में मैं

मुझ को यूं मदहोश ए उल्फ़त कीजिए

कीजिए अपना महज़ अपना मुझे

क़त'आ मेरी सब से निस्बत कीजिए

दफ़'आ हो तैबाह से ये नज्दी बला

या रसूल अल्लाह अ'जलत कीजिए

मांग लीजिए ख़ाक़ ए तैबाह में जगह

ख़ाक़ में सामान ए इ'शरत कीजिए

उन पे मरना है दवाम ए ज़िंदगी

मौत से फिर क्यों ना उल्फ़त कीजिए

जान लेने आए वो जान ए जहां

मौत से फिर कैसे नफ़रत कीजिए

ज़िंदगी है सद ए राह दौस्तां

किस लिए जीने की हसरत कीजिए

उन पे मर जीने की रखिए आरज़ू

यूं सदा जीने की सूरत कीजिए

ज़ुल्मतों में रौशनी के वास्ते

दाग़ ए सीनाह की हिफ़ाज़त कीजिए

आतिश ए दोज़ख़ बुझाने के लिए

तेज़ तर नार ए मोहब्बत कीजिए

तेज़ कीजिए सीनाह नज्दी की आग

ज़िक्र ए आयात ए आयात वहदत कीजिए

कीजिए याद ए ख़िताब उल अंबिया

ख़त्म यूं हर रंज ओ कुलफ़त कीजिए

ताए हो नाम ए पाक पर मेरी किताब

ये करम ख़त्म ए रिसालत कीजिए

जद्दा बी वस्ली दायमी या सय्यदी

ख़त्म अब ये दौर ए फ़ुरक़त कीजिए

इंतज़ार ए जान ए जानां है जान को

या रसूल अल्लाह कसरत कीजिए

देंगे वोह ख़ुद की मोहब्बत का सिला

मरते दम उन की ज़ियारत कीजिए

ठंडे ठंडे ख़ुशबुओं में बस चलें

याद गेसू वक़्त ए रहलत कीजिए

ग़ौस ए आज़म आप से फ़रयाद है

दस्तगीरी मेरे हज़रत कीजिए

रेहलत ए अख़्तर का हंगाम आ गया

साया ए रहमत में रुकसत कीजिए.

37. बहार ए बे ख़िज़ां

हमारे बाग़ ए अरमां में बहार ए बे ख़िज़ां आए
कभी जो इस तरफ़ ख़नदान वो जान ए गुलिस्तान आए

वोह जान ए यूसुफ़ आजाए अगर मेरे तसव्वुर में
ख़ुदा रखे वहीं खींच कर बाहर ए दो जहां आए

कोई देखे मेरी आंखों से अ'यज़ाज़ आक़ा का
सलामी को दर ए हज़रत पे शाह ए क़ुदसियां आए

जमाल ए रू ए जानां देख लूं कुछ ऐसा समां हो
कभी तो बज़्म ए दिल में या ख़ुदा ! आराम ए जां आए

या इलाही ! अपनी सत्तारी का तुझ को वास्ता सुन ले
सर ए मेहशर ना बंदे का गुनाह कोई अयां आए

करम से इस कमीने की भी मौला लाज रख लेना

तेरा अख़्तर तेरे साए में शाह ए दो जहां आए.

38. फ़रिश्ते जिस के ज़ाईर हैं

फ़रिश्ते जिस के ज़ाईर हैं मदीने में वोह तुरबत है

ये वो तुरबत है जिस को अ'र्श ए आ'ज़म पर फ़ज़ीलत है

भला दश्त ए मदीनाह से चमन को कोई निसबत है

मदीने की फ़ज़ा रश्क ए बहार ए बाग़ ए जन्नत है

मदीनाह गर सलामत है तो फिर सब कुछ सलामत है

ख़ुदा रखे मदीने को उसी का दम ग़नीमत है

मदीनाह ऐसा गुलशन है जो हर गुलशन की ज़ीनत है

बहार ए बाग़ ए जन्नत भी मदीने की बदौलत है

मदीनाह छोड़ कर सैर ए जिनां की क्या ज़रूरत है

ये जन्नत से भी बेहतर है ये जीते जी की जन्नत है

हमें क्या हक़ तआ'ला को मदीने से मोहब्बत है

मदीने से मोहब्बत उन से उल्फ़त की अ'लामत है

गदा गर है जो उस घर का वाही सुल्तान ए क़िस्मत है

गदाई उस दर ए वाला की रश्क ए बादशाहत है

जो मुस्तग़्नी हुआ उन से मुक़द्दर उस का ख़ैबत है

ख़लील उल्लाह की हंगाम ए महशर उन की हाजत है

इलाही ! वोह मदीनाह कैसी बस्ती है दिखा देना

जहां रहमत बरसती है जहां रहमत ही रहमत है

मदीनाह छोड़ कर जन्नत की ख़ुशबू मिल नहीं सकती

मदीनाह से मोहब्बत है तो जन्नत की ज़मानत है

ज़मीं पर वोह मोहम्मद ﷺ हैं वोह अहमद ﷺ आसमानों में

यहां भी उन का चर्चा है वहां भी उन की मिदहत

यहां भी उन की चलती है वहां भी उन की चलती है

मदीनाह राजधानी है दो आ'लम पर हुकूमत है

ग़ज़ब ही कर दिया अख़्तर मदीने से चले आए

ये वो जन्नत है जिस की अ'र्श वालों को भी हसरत है

मदीनाह छोड़ कर अख़्तर भला क्यों जाए जन्नत को

ये जन्नत क्या हर इक निअ'मत मदीने की बदौलत है.

39. शमीम ए ज़ुल्फ़ ए नबी ﷺ

शमीम ए ज़ुल्फ़ ए नबी ला सबा मदीने से
मरीज़ ए हिज्र को ला कर सूंघा मदीने से

ये आ रही है मेरे दिल को सदा मदीने से
हर इक दुख की मिलेगी दवा मदीने से

मदीनाह कहता है हमदम ना जा मदीने से
तुझे है ऐ'श ए आबाद की सला मदीने से

नसीम ए मस्त चले दिलरुबा मदीने से
बहार ए दिल में बसे दिलकुशा मदीने से

नसीम ए मस्त चले दिलरुबा मदीने से
बहार ओ बाग़ बने दिल मेरा मदीने से

उठाओ ! बादह कशो ! साग़र ए शराब कुहन
वोह देखो झूम के आई घटा मदीने से

मदीनाह जान ओ जिनान ए जहां है वोह सुन लें

जिन्हें जुनून ए जिनां ले चला मदीने से

फ़िज़ा ए दहर को घेरा है जिस की मौजों ने

वोह सैल ए नूर ए मोहम्मद ﷺ चला मदीने से

जहां भर के सिखाने को ख़ुसरवी के उसूल

ग़ुबार ए खाक़ ए नशीनां उठा मदीने से

तेरे करम के मैं क़ुरबां ये हुक्म फ़रमा दें

ना जाए गा मेरा अख़्तर रज़ा मदीने से.

40. मेरी चश्म कान ए गौहर हो रही है

नज़र पे किसी की नज़र हो रही है

मेरी चश्म कान ए गौहर हो रही है

मेरे ख़ुफ़िया नालों की वोह सुन रहे हैं

इ'नायत किस की इधर हो रही है

वोह तैबाह में मुझको तलब कर रहे हैं

तलब मेरी अब मो'अतबर हो रही है

हुआ तालिब ए तैबाह मतलूब ए तैबाह

तलब तेरी ऐ मुंतज़र हो रही है

मदीने में हूं और पिछला पहर है

शब ए ज़िंदगी की सहर हो रही है

नई ज़िंदगी की वोह मय दे रहे है

मेरी ज़िंदगानी अमर हो रही है

मदीने से मेरी बला जाए अख़्तर

मेरी ज़िंदगी वक़्फ़ ए दर हो रही है.

41. एक नज़र मेहर ए दरक्शां ए जमाल

इस तरफ़ भी एक नज़र मेहर ए दरक्शां ए जमाल
हम भी रखते हैं बहुत मुद्दत से अरमान ए जमाल

तुम ने अच्छों पे किया है ख़ूब फ़ैज़ान ए जमाल
हम बदों पर भी निगाह ए लुत्फ़ ए सुल्तान ए जमाल

एक इशारे से किया शाक़ माह ए ताबां आप ने
मरहबा सद मरहबा सल्ले अ'ला शान ए जमाल

तेरी जां बख़्शी के सदके ऐ मसीहा ए ज़मां
संगरेजों ने पढ़ा कलमा तेरा जान ए जमाल

कब से बैठे हैं लगाए लौ दर ए जानां पे हम
हाय कब तक दीद को तरसें फ़िदायान ए जमाल

फ़र्श आंखों का बिछाओ राह गुज़र में आशिक़ों
उन के नक़्शे पा से होंगे मज़हर ए शान ए जमाल

मर के मिट्टी में मिले वोह नज्दियों ! बिलकुल ग़लत

हस्ब ए साबिक़ अब भी हैं मरक़द में सुल्तान ए जमाल

गर्मी ए महशर गुनाहगारों ! है बस कुछ देर की

अब्र बन कर छाएं गे गेसू ए सुल्तान ए जमाल

कर के दअ'वाह हमसरी का कैसे मुंह के बल गिरा

मिट गया वोह जिस ने की तौहीन ए सुल्तान ए जमाल

हासीदान ए शाह ए दीं को दीजिए अख़्तर जवाब

दर हक़ीक़त मुस्तफ़ा प्यारे हैं सुल्तान ए जमाल.

42. मेहर ए अनवर ऐड़ियां

अ'र्श पर हैं उन की हर सू जलवाह गुस्तर एड़ियां

गह बा शक्ल ए बद्र हैं गह महर ए अनवर एड़ियां

मैं फ़िदा क्या ख़ूब हैं तस्कीन ए मुज़्तर एड़ियां

रोती सूरत को हंसा देती है अक्सर एड़ियां

दाफ़े'अ ए हर कर्ब ओ आफ़त हैं वोह यावर एड़ियां

बंदह ए हासी पे रहमत बंदाह परवर एड़ियां

ग़ुंचा ए उम्मीद उन की दीद का होगा कभी

फूल के हैं अब नज़र में उन की ख़ुशतर एड़ियां

नूर के टुकड़ों पे उनके बद्र ओ अख़्तर भी फ़िदा

मरहबा कितनी हैं प्यारी उनकी दिलबर एड़ियां

या ख़ुदा ता वक़्त ए रुख़सत जलवाह अफ़गन ही रहें

आसमान ए नूर की वोह शम्स ए अज़हर एड़ियां

उन की रिफ़अत वाह वाह क्या बात अख़्तर देख लो

अ'र्श ए आ'ज़म पर भी पहुंचीं उन की बरतर एड़ियां.

43. गर हमें ज़ौक ए तलब सा रहनुमा मिलता नहीं

गर हमें ज़ौक ए तलब सा रहनुमा मिलता नहीं
रस्ताह मिलता नहीं और मुद्द'आ मिलता नहीं

झुक के मेहर ओ माह गोया दे रहें हैं ये सदा
दोसरा में कोई तुम सा दूसरा मिलता नहीं

इब्तग़ू फ़रमा के गोया रब ने ये फ़रमा दिया
बे वसीलाह नज्दियों ! हरगिज़ ख़ुदा मिलता नहीं

उन से उम्मीद ए वफ़ा ऐ दिल महज़ बेकार है
अहले दुनिया से मोहब्बत का सिला मिलता नहीं

किस ने तुझ से कह दिया दिल बे ग़रज़ आते हैं वोह
बे गरज़ नादान कोई बे वफ़ा मिलता नहीं

देखते ही देखते सब अपने बेगाने हुए
अब तो ढूंढे से भी की आशना मिलता नहीं

लौ लगाता क्यों नहीं बाब ए शाह ए कौनेन से
हाथ उठा कर देख तू फिर उन से क्या मिलता नहीं

तेरे मयख़ाने में जो खिंची वोह मय क्या हुई
बात क्या है आज पीने का मज़ा मिलता नहीं

साक़िया तेरी निगाह ए नाज़ मय की जान थी
फेर ली तूने नज़र तो वोह नशा मिलता नहीं

पीने वाले देख पी कर आज उन की आंख से
फिर ये आ'लम होगा के ख़ुद का पता मिलता नहीं

अख़्तर ए ख़स्ता अ'बस दर दर फिरा करता है तू
जुज़ दर ए अहमद कहीं से मुद्द'आ मिलता नहीं.

44. दर ए अहमद पे अब मेरी जबीं है

दर ए अहमद पे अब मेरी जबीं है
मुझे कुछ फ़िक्र ए दो'आलम नहीं है

मुझे कल अपनी बख़्शिश का यकीं है
के उल्फ़त उन की दिल में जांगुज़ीं है

बहारें यूं तो जन्नत में हैं लाखों
बहार ए दश्त ए तैबा पर कहीं है

मैं वस्फ़ ए माह ए तैबा कर रहा हूं
बला से अगर कोई चीं बर जबीं है

अ'बस जाना है तो ग़ैरों की जानिब
के बाब ए रहमत ए रहमां यहीं है

गुनाहगारों ना घबराओ के अपनी
शफ़ा'अत को शफ़ी उल मुज़्नबीं है

फ़रैब ए नफ़्स में हम दम ना आना

बचे रहना यह मार ए आस्तीं है

दिल ए बेताब से अख़्तर यह कह दो

संभल जाए मदीनाह अब क़रीं है.

45. नूर ही नूर है ज़िया ही है

तख़्त ए ज़र्रें है ना ताज ए शाही है

क्या फ़क़ीरानाह बादशाही है

फ़िक्र पर शान ये के ज़ेर ए नगीं

माह से ले के तबामाही है

रू ए अनवर के सामने सूरज

जैसे एक शम'आ सुबह गाही है

साया ए ज़ात क्यों नज़र आए

नूर ही नूर है ज़िया ही है

रीत आक़ा की छोड़ दी हम ने

अपनी मेहमान अब तबाही है

एक निगाह ए करम से मिट जाए

दिल पे अख़्तर के जो सियाही है.

46. क़त'आ

सोया नहीं मैं रात भर इ'श्क़ ए हुज़ूर में

कैसा ये रुत जगा रहा कैफ़ ओ सरवर में

पिछली पहर जो मर गया उनका वोह जानिसार

सरगोशियां ये क्या हुईं ग़ुलमान ओ हूर में.

47. मुनव्वर हो गया आ'लम

तुम्हारे रुख़ के जलवों से मुनव्वर हो गया आ'लम

मगर क्यों कर घटा ग़म की मेरे दिल से नहीं छटती

करूं अख़्तर शुमारी इंतज़ार ए सुबह मैं कब तक

इलाही है ये कैसी रात के काटे नहीं कटती

ना घबरा हादिसात ए दहर से इतना मेरे हम दम

ये दुनिया है कभी ये एक हालत पर नहीं रहती.

48. क़त'आ

जबीन ए वहाबी पे दिल की सियाही

नुमायां हुई जैसे हो मेहर ए शाही

के इन सज्दाह हाय बगैर ए मोहब्बत

ना याबंद हरगिज़ कुबूल अज़ इलाही

49. बज़्म ए यार का आ'लम

नित नई एक उलझन है

उफ्फ ग़म ए रोज़गार का आ'लम

कैफ़ ओ मस्ती में ग़र्क ये दुनिया

जाने क्या दिल फ़िगार का आ'लम

ऐ ख़ुदा ! तुझ पे ख़ूब ज़ाहिर है

हाय जो मुझ से सौगवार का आ'लम

जान ए गुलशन ने हम से मुंह मोड़ा

अब कहां वोह बहार का आ'लम

अब कहां वोह छलकते पैमाने

अब कहां वोह ख़ुमार का आ'लम

हाय क्या हो गया घड़ी भर में

वोह शकीब ओ क़रार का आ'लम

दार ए फ़ानी से क्या ग़रज इस को

जिस का आ'लम क़रार का आ'लम

अब वोह रंगीनियां नहीं या रब !

क्या हुआ बज़्म ए यार का आ'लम

याद आता है वक़्त ए ग़म अख़्तर

रुख़सत ए ग़म गुसार का आ'लम.

50. ज़ारी ए पैहम क्या है

मेरी मय्यत पे ये अहबाब का मातम क्या है
शोर कैसा है ये और ज़ारी ए पैहम क्या है

वाए हसरत दम ए आख़िर भी ना आ कर पूछा
मुद्द'आ कुछ तो बता दीदाह ए पुर नाम क्या है

कुछ बिगड़ता तो नहीं मौत से अपनी यारो
हमसफ़ीरान ए गुलिस्तां ना रहे हम क्या है

इन ख़यालात में गुम था के झिंझोड़ा मुझ को
एक अंजान सी आवाज़ ने एक दम क्या है

कौन होता है मुसीबत में शरीक ओ हमदम
होश में आ ये नशा सा तुझे हर दम क्या है

कैफ़ ओ मस्ती में ये मदहोश ज़माने वाले
ख़ाक़ जानें ग़म ओ आ'लम का आ'लम क्या है

उन से उम्मीद ए वफ़ा हाए तेरी नादानी

क्या ख़बर ये उन के ये किरदार ए मु'अज़्जम क्या है

वोह जो हैं हम से गुरीजां तो बला से अपनी

जब यही तौर ए जहां है तो भला ग़म क्या है

मीठी बातों पे ना जा अहले जहां की अख़्तर

अक़्ल को काम में ला ग़फ़लत ए पैहम क्या है.

51. नज़ारे बदल गए

गैर अपने हो गए जो हमारे बदल गए

नज़रें बदल गईं तो नज़ारे बदल गए

किस को सुनाएगा यहां ग़म की दास्तान

जो ग़म में साथ देते वोह सारे बदल गए

ढूंढने से पाइएगा ना पहली सी मस्तियां

बदली शराब को वोह प्याले बदल गए

इस दौर ए मस्लिहत में वफ़ा कोई शय नहीं

गाहे हुए हमारे तो गाहे बदल गए

अख़्तर लगाइए लौ नबी ए करीम से

क्या फ़िक्र अहले दुनिया जो सारे बदल गए.

52. अश्क ए रवां

सोज़ ए निहां अश्क ए रवां आह ओ फ़ुग़ां देते हैं

क्यों मोहब्बत का सिला अहले जहां देते हैं

कौन रखता तेरी इस ख़ास इ'नायत का भरम

बस हमें दाद ए सितम गिरयाह कुनां देते हैं

अब पास ए मर्ग उभरते हैं ये दरीनाह नुक़ूश

हम फ़ना हो के भी हस्ती का निशां देते हैं

कुफ़्र है देख ये ख़ौफ़ और रजा उनसे नदीम

बुत भी क्या तुझ को भला सौद ओ ज़ियां देते हैं

53. राह ए उल्फ़त में

नहीं जाती किसी सूरत परेशानी नहीं जाती

इलाही ! मेरे दिल की ख़ाना ए वीरानी नहीं जाती

ना जाने किस क़दर सदमे उठाए राह ए उल्फ़त में

नहीं जाती मगर दिल की वोह नादानी नहीं जाती

पिए बिन ही यहां मस्ती का ये आ'लम मा'अज़ अल्लाह

क़रीब ए मर्ग भी वो चाल ए मस्तानी नहीं जाती

हज़ारों दर्द सहता हूं इसी उम्मीद में अख़्तर

की हरगिज़ राइगां फ़रयाद ए रूहानी नहीं जाती.

54. मंज़र ए इस्लाम

मंबा ए नूर ए रिसालत मंज़र ए इस्लाम है

दर्स गाह ए इ'ल्म ओ सुन्नत मंज़र ए इस्लाम है

क़िब्ला गाह ए दीन ओ मिल्लत मंज़र ए इस्लाम है

मरकज़ ए इस्लाह ए ख़िलक़त मंज़र ए इस्लाम है

याद गार ए आ'ला हज़रत मंज़र ए इस्लाम है.

55. अयज़ां

दूर से आता यहां हर एक तिशना काम है

बादह ए हुब्ब ए नबी का इस को मिलता जाम है

आप कट जाता है उस से जो भी नाफ़िर जाम है

मुन्किरों के वास्ते ये तेग ए ख़ून आशाम है

जैसा उस का नाम है वैसा ही उसका काम है.

56. अ'रबी ना'अत

रसूल अल्लाही या कंज उल अमानी	رسولَ اللّٰه يا كنزَ الأماني
अ'ला अ'ताबिकुम वक़फ़ल मुआ'नी	على أعتابكم وقف المُعاني
बी हाज़ल बाबी या तज़्ज़ुल जलीलू	بهٰذا الباب يعتزّ الذليل
लि हाज़ल बाबी याअ'ती कुल्लु आ'नी	لهٰذا الباب يأتي كل عان
लि हाज़ल बाबी इंतादाबर रहीमू	لهٰذا الباب إنتدب الرحيم
ज़ाविल औज़ारी मिन क़ासिंव वदानी	ذوى الأوزار من قاص ودان
रसूल अल्लाही इन्नी मुस्ताजिरुन	رسولَ الله إنّي مستجير
लदा आ'ताबिकुम मिन कुल्ली जानी	لدى أعتابكم من كل جان
रसूल अल्लाही फ़म्मआ'नी व कुन ली	رسول الله فامنعني وكن لي
मुई'नल ख़ैरा औ'निंव फ़िल ज़मानी	معينا خير عون في الزمان
लकुम जाअ'ता रौहलना हफ़ाफ़ा	لكم جاءت رواحلنا حفافا
वकुम सदरत महमालता अ'वानी	وكم صدرت محملة عواني

वकम फ़ाज़ल बिहारुका कुल्ला हीनि
वकम जादत समा उ'का कुल्ला आनी

وكم فاضت بحارک كل حين
وكم جادت سماءک كل آن

फ़िदाकुम महजती अन्तुम इ'मदी
मुरादी बुग़ायती कंजी अमानी

فداكم مهجتي أنتم عمادی
مرادی بغيتي كنزی أمانی

अला तहयूना मिन क़ल्बी मवाता
अला तातूना मुंदरसल मकानी

الا تحيون من قلبی مواتا
الأ تاتون مندرس المكان

वला ज़ालाती बिहारु कुम तफ़ीज़ु
व अमतारुन नदा मर्रल अवानी

ولازالت بحاركم تفيض
وأمطار الندى مرّ الأوان

अमा ली शम्सी फ़ी लैली शरूक़ु
अला मा यजलू महयाकुम कियानी

اما للشمس فی ليلی شروق
الا ما يجلو محياكم كيانی

वकम जल्लैतुम अ'मैल उयू'नी
वकम अहययतुमु मयतल जिनानी

وكم جليتم عمی العيون
وكم أحييتم ميت الجنان

रसूल अल्लाही इन्नी मुस्ताहिब्बुन	رسولَ الله انّى مستحِبٌّ
मदिनाताकुम अ'ला रौज़िल जिनानी	مدينتَكم علٰى روضِ الجنان
रसूल अल्लाही जादू बिल विसाली	رسول الله جودوابالوصال
कफ़ा मिन हिजरी कुम मा क़दा'आनी.	كفى من هجر كم ماقدأعانى

57. या मुजीबु या मुजाबु

या मुजीबु या मुजाबु
अन्ता निअ'मल मुस्तनाबू

يَا مُجِيْبُ يَا مُجَابُ - أَنْتَ نِعْمَ الْمُسْتَنَابُ

या रसूल अल्लाही हक़्क़न
अन्ता लिननि'अमाई बाबू

يَا رَسُوْلَ اللهِ حَقًّا - أَنْتَ لِلنَّعْمَاءِ بَابُ

अन्ता माताहा वाहिदन
फ़िल वरा अन्तल माआबू

أَنْتَ مَأْتَاهَا وَحِيْدًا - فِى الْوَرَى أَنْتَ الْمَآبُ

बिल हुदा व हक़्क़ी वफ़ा
अलख़ल्क़ा मारऊ ला युराबू

بِالْهُدَى وَالْحَقِّ وَافَى - الْخَلْقَ مَرْءٌ لَا يُرَابُ

ख़िरतिन इल्लाही फ़ीना
अलजमी'ऊ मिन्हा ताआबू

خِيْرَةٌ لِلَّهِ فِيْنَا - الْجَمِيْعُ مِنْهُ طَابُوْا

अहमदुल मुख़्तारु हिब्बी
मल लाहू वज्हुय युहाबू

أَحْمَدُ الْمُخْتَارُ حِبِّى - مَنْ لَّهُ وَجْهٌ يُّهَابُ

श'अरुहु मिस्लुस्सहाबी

वरदा बुहु शराबु

شَعْرُهُ مِثْلُ السَّحَابِ - وَرُضَا بُهُ شَرَابُ

सदरुहुल मिश्कातु फ़ीहा

शमअ'तुन ला बल शहाबू

صَدْرُهُ الْمِشْكَاةُ فِيْهَا - شَمْعَةٌ لَا بَلْ شَهَابُ

जूदुहु फ़ाक़ल जवादी

वबिही जादस सहाबू

جُوْدُهُ فَاقَ الْجَوَادِىْ - وَبِهِ جَادَ السَّحَابُ

कुल्लुहु माला युहाद्दु

कसरुहू बहरुन उ'बाबू

قَلُّهُ مَالَا يُحَدُّ - كَثْرُهُ بَحْرٌ عِبَابُ

फ़दलुहु दौमन मज़ीदू

लैसा युहसीहि हिसाबू

فَضْلُهُ دَوْمًا مَزِيْدُ - لَيْسَ يُحْصِيْهِ حِسَابُ

वमज़ारुहू अमानू

वलिमन अ'सा मताबू

وَمَزَارُهُ أَمَانُ - وَلِمَنْ عَصَى مَتَابُ

अख़्तरुल जानी अताका

फ़नफ़ीअ'न्हु युआ'बू.

أَخْتَرُ الْجَانِيْ أَتَاكَ - فَانْفِ عَنْهُ يُعَابُ

58. अ'रबी सलाम

هادیَ السبلِ یا مَنار سَلام

عددَ البرِّ والبِحارِ سَلام

یَتَوالی عَلیكَ من قلبی

ما ترنم الهزارُ سلام

قدرًا السماءِ والارضِ

عددَ اللیلِ والنهارِ سَلام

بل علیك سائرَ الدهر

عدَد الزحفِ والفرارِ سَلام

یا سراجُ المنیر من ربّی

من به العالمُ استنار سلام

یا رسولَ الأنام أحمده

قدوة القادة الخیار سلام

یا معینا لكل ملهوف

خیرَ جار لذی استجار سلام

يا صبا بلَغى إلى حبّى

من بعيد عن الديار سلام

هائم فى طلاب طبية

مستهاب له الجوار سلام

مُهجتى بُنيتى وعا ئلتى

كلّها تُقرئ المزار سلام

جاءت العصاة سدتكم

يستجيرون يا مجار سلام

منكم ترتجى شفاعتكم

للجناة الكبار سلام

ويتوبون من ذنوبهم

بشر وهم بالاغتفار سلام

لمن از دار طيبتكم

جنّة الخلد والقرار سلام

ولمن هوى مدينتكم

مثله يا خيار سلام

اِجعلونى من أهل بلدتكم

وعليكم ذوى الفخار سلام

ما تبسّمت زهور رُبى

رُش كالطلّ فى الخضار سلام

وسلام كثاقب النجم

ثم كالشمس فى النهار سلام

وسَلام كمائد الغصن

ثم كالزهر فى ازدهار سلام

اشتكى القلب هجركم

قرّبو نى من الديار سلام

شرف الله قدركم

شرفونی بالا زدیار سلام

کم زهنی منکم شرف
کم سمی منکم الفخار سلام

کم سمت بکم أصولکم
کم علی منکم النجار سلام

سادتی أنکم لمأ منة
للّذی سامه الشرار سلام

لن یضام الذی أحبکم
بل له دائم الوقار سلام

کم لّکم مِن سَوابِغِ النِعَمِ
دائماتِ بلا انحصار سلام

اختر المجتدی یلّغکم
سَائلا مِنکم الجوار سَلام

59. अ'रबी ग़ज़ल

وانی واثق أن لن أضاما

فلی میثاق ربی أن یتوبا

علیّ وهوعن خُلف تساما

الهی فاغتفرلی ما مضی من

ذنوبی قبل أن ألقی حماما

وللا خوان والأ صحاب أنا

دعونا کافّا فاد خلنا السلاما

وجنّبنا عذاب النّار ربّی

فانّ عذابها كان غراما

وإبق المفتى الشيخ الجليلا

على اعدائه دو ما حساما

ومتّعنا به دهرا طويلا

وبارك فيه وارفعه مقاما

بجاه المصطفى من جاءفينا

رسولا هاد يا يجلو الظلاما

60. या रसूल अल्लाह या ख़ैर उल अनाम

या रसूल अल्लाह या ख़ैर उल अनाम

दौर ए इफ़्तेदाह का लीजिए सलाम

ज़ैब ओ ज़ीन ए अ'र्श ए रहमां अस्सलाम

निकहत ए तैब ए गुलिस्तां अस्सलाम

ऐ क़रार ए बेक़रारां अस्सलाम

चराग़ साज़ ए दिलफ़िगारां अस्सलाम

ऐ शहेंशाह ए मदीनाह अस्सलाम

ऐ क़रार ए क़ल्ब ओ सिनाह अस्सलाम

जान ए जान ओ जान ए ईमां अस्सलाम

ऐ शफ़ी ए अहले इसयां अस्सलाम

महबित ए वही ओ सकीनाह अस्सलाम

ग़ैब दान ओ ग़ैब ए बीना अस्सलाम

या रसूल अल्लाह मदीनाह की फ़िज़ाओं को सलाम

या रसूल अल्लाह तैबाह की हवाओं को सलाम

ऐ ख़ुदा को देखने वाले नबी

कौन सी शय तुझ से आ'लम में छुपी

कीजिए अपने करम से सूरत ए ऐ'श ए दवाम

या रसूल अल्लाह अ'ता हो ख़ुल्द ए तैबाह में मक़ाम

बे ठिकानों को ठिकाना दीजिए

बिस्तर ए ख़ाक़ ए मदीनाह दीजिए

तू तो वाक़िफ़ है मेरे अहवाल से

क्या गरज़ फिर मुझ को अ'र्ज़ ए हाल से

काम बंदों का है अर्ज़ ए मुद्द'आ

यूं लबों पर मक़सद ए दिल आ गया

दफ़'आ तैबाह से हो ये नज्दी बला

या रसूल अल्लाह अज्जल बिलजला

या रसूल अल्लाह बहर ए फ़ातिमाह

अपने अख़्तर को मदीनाह में गुमा.

61. मेरे अल्लाह के निगार सलाम

मेरे अल्लाह के निगार सलाम

दस्त ए क़ुदरत के शाहकार सलाम

दोनों आलम के ताजदार सलाम

जान ए हर जान ओ जानदार सलाम

निकहत ए हर चमन हज़ार सलाम

जान ए हर बुलबुल हज़ार सलाम

ख़ाक़ ए तैबाह बने मेरी हस्ती

अ'र्ज़ करता है ख़ाक़सार सलाम

शौक़ ए पैहम की इल्तिजा सुन लो

तुम पे हो मेरी जां निसार सलाम

फिर मदीने में कब बुलाओगे

तुम से कहता है इंतज़ार सलाम

मुझ को ज़ालिम पे इख़्तेयार नहीं

तुम तो रखते हो इख़्तेयार सलाम

ख़ुल्द कहती है यूं मदीने से

तुझ पे ऐ ख़ुल्द की बाहर सलाम

मोतियों को सजा कर पलकों पर

कहती है चश्म ए अश्कबार सलाम

अपनी उल्फ़त का ऐसा जाम पिला

जिस का बढ़ता रहे ख़ुमार सलाम

दर्द ए उल्फ़त में दे मज़ा ऐसा

दिल ना पाए कभी क़रार सलाम

दिल की धड़कन तुम्हारी याद बने

हर नफस पे तुम बेशुमार सलाम

तेरी ख़ातिर ज़लील होना है

मेरी इ'ज़्ज़त मेरे वक़ार सलाम

अपने अख़्तर का लो सलाम शहा

तुम पे ऐ जान ए क़रार सलाम.

62. ऐ मदीने के शहर ए यार सलाम

ऐ मदीने के शहर ए यार सलाम

ऐ ज़माने के ताजदार सलाम

ग़म के मारों के ग़मगुसार सलाम

ऐ क़रार ए दिल फ़िगार सलाम

ज़ीनत ए अ'र्श ए किर्दगार सलाम

फ़र्श के ताज ए इफ़्तेख़ार सलाम

फ़ताह ओ ख़ातिम ए पयंबरी

गुलशन ए दहर की बहार सलाम

लज़्ज़त ए आगाह पा ए बौस ए हबीब

ऐ मदीने के राह गुज़ार सलाम

गुम्बद ए सब्ज़ रहमत ए दो आ'लम

तुझ को कहते हैं सब्ज़ा ज़ार सलाम

ऐ गुज़र गाह ए सरवर ए दो आ'लम

चश्म ओ सर हूं तेरे निसार सलाम

नक़्श ए याद ए नबी ख़लिश से जमा

दश्त ए तैबाह के प्यारे ख़ार सलाम

याद है तेरी कितनी कैफ़ आवर

ग़म है फ़ुरहत से हम किनार सलाम.

63. ऐ सबा ले जा मदीने को पयाम

ऐ सबा ले जा मदीने को पयाम

अ'र्ज़ कर दे उन से बा सद एहतेराम

ऐ मकीन ए गुम्बद ए ख़ज़रा सलाम

ऐ शकीब ए हर दिल ए शैदा सलाम

अब मदीने में मुझे बुलवाइए

अपने बेकस पर करम फ़रमाइए

बुलबुल ए बे पर पे हो जाए करम

आशयानाह दाह बा गुलज़ार ए हरम

हिन्द का जंगल मुझे भाता नहीं

बस गई आंखों में तैबाह की ज़मीं

ज़िंदगी के हैं मदीने में मज़े

ऐ'श जो चाहे मदीने को चले

ख़ुल्द की ख़ातिर मदीनाह छोड़ दूं

ऐन ख़याल अस्त ओ मुहाल अस्त ओ जुनूं

ख़ुल्द के तालिब से कह दो बेगुमां

तालिब ए तैबाह की तालिब है जिनां

मुझ से पहले मेरा दिल हाज़िर हुआ

अर्ज़ ए तैबाह किस क़दर है दिलरुबा

कितनी प्यारी है मदीने की चमक

रोशनी ही रोशनी है ता फ़लक़

कितनी भीनी है मदीने की महक

बस गई बू ए मदिनाह अ'र्श तक

या रसूल अल्लाह अज़ रहमत नगर

दर बाक़ी ए पाक ख़वाहम मुस्तक़र

बस अनोखी है मदीने की बहार

रश्क ए सद गुल हैं इसी गुलशन की ख़ार

कितनी रौशन है यहां की हर एक शब

हर तरफ़ है ताबिश माह ए अ'रब

क्या मदीने को ज़रूरत चांद की

माह ए तैबाह की है हर सू चांदनी

नूर वाले साहिब ए मेअ'राज हैं

महर ओ माह उन के सभी मोहताज हैं

ऐ खुशा बख़्त रसाए अख़्तरात

बाज़ आवर्दी गदा रा बरदरत.

64. मनक़बत ए ईमाम हुसैन रदी अल्लाह अन्हू

शुजा'अत नाज़ करती है जलालत नाज़ करती है
वोह सुल्तान ए ज़मां हैं उन पे शौकत नाज़ करती है

सदाक़त नाज़ करती है अमानत नाज़ करती है
हिमायत नाज़ करती है मुरव्वत नाज़ करती है

शाह ए ख़ुबां पे हर ख़ूबी ओ ख़सलत नाज़ करती है
करीम ऐसे हैं वो उन पर करामत नाज़ करती है

जहान ए हुस्न में भी कुछ निराली शाम है उन की
नबी के गुल पे गुलज़ारों की ज़ीनत नाज़ करती है

शहंशाह ए शहीदां हो अनोखी शान वाले हो
हुसैन इब्ने अ'ली शहादत नाज़ करती है

बिठा कर शाना ए अक़दस पे करदी शान दो बाला
नबी के लाडलों पर हर फ़ज़ीलत नाज़ करती है

जबीन ए नाज़ उन की जलवाह गाह ए हुस्न है किस की

रुख़ ए ज़ैबा पे हज़रत की मलाहत नाज़ करती है

निगाह ए नाज़ से नक़्शा बदल देते हैं आ'लम का

अदा ए सरवर ए ख़ूबां पे नुदरत नाज़ करती है

फिदाई हूं तो किसका हूं कोई देखे मेरी क़िस्मत

क़दम पर जिस हसीं की जान ए तल'अत नाज़ करती है

ख़ुदाके फ़ज़्ल से अख़्तर मैं उन का नाम लेवा हूं

मैं हूं क़िस्मत पे नाज़ां मुझ पे क़िस्मत नाज़ करती है

65. अयज़ा

बाग़ ए तस्लीम ओ रज़ा में गुल खिलाते हैं हुसैन

या'नी हंगाम ए मुसीबत मुस्कुराते हैं हुसैन

बर्क़ आ'लम ए सोज़ का आ'लम दिखाते हैं हुसैन

मुस्कुरा कर क़िल'आ बातिल का गिराते हैं हुसैन

मर्ज़ी ए मौला की ख़ातिर हर सितम को सह लिया

किस ख़ुशी से ग़म दिल पर उठाते हैं हुसैन.

66. या ग़ौस अल मदद

पीरों के आप पीर हैं या ग़ौस अल मदद
अहले सफ़ा के मीर हैं या ग़ौस अल मदद

रंज ओ अलम कसीर हैं या ग़ौस अल मदद
हम आ'जीज़ ओ असीर हैं या ग़ौस अल मदद

हम कैसे जी रहे हैं ये तुम से क्या कहें
हम हैं अलम के तीर हैं या ग़ौस अल मदद

तीर ए नज़र से फेर दो सारे अलम ए तीर
क्या ये अलम के तीर हैं या ग़ौस अल मदद

तेरे ही हाथ लाज है या पीर ए दस्तगीर
हम तुझ से दस्तगीर हैं या ग़ौस अल मदद

इदफ़ा'अ शरारा शर या ग़ौसनल अबर
शर ले शरर ख़तीर हैं या ग़ौस अल मदद

किस दिल से हो बयान बेदाद ज़ालिमां

ज़ालिम बड़े शरीर हैं या ग़ौस अल मदद

अहले सफ़ा ने पाई तुम से राह ए सफ़ा

सब तुम से मुस्तनिज़ हैं या ग़ौस अल मदद

सदक़ा रसूल ए पाक का झोली में डाल दो

हम क़ादिरी फ़क़ीर हैं या ग़ौस अल मदद

दिल की सुनाए अख़्तर दिल की ज़ुबान में

कहते ये बहते नीर हैं या ग़ौस अल मदद.

67. मनक़बत ए हज़रत सय्यीद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा

हज़रत ए मस'ऊद ए ग़ाज़ी अख़्तर ए बुर्ज ए हुदा
बेकसों का हमनवां वोह सालिकों का मुक़्तदा

साक़ी ए साहबा ए उल्फ़त राज़ दान ए मअ'रिफ़त
बादशाह ऐसा वोह जिस की एक दुनिया है गदा

आसमान ए नूर का ऐसा दरख़शिंदा क़मर
जिसकी ताबिश से मुनव्वर सारा आ'लम हो गया

नायब ए शाह ए शहीदां वोह मुहाफ़िज़ नूर का
जिस ने सींचा है लहू से गुलशन ए दीन ए ख़ुदा

इस्तेक़ामत का वोह कोह ए मोहकम बाला तरीं
जिस के आगे कोह ए आ'फ़त ओ मसाइब झुक गया

सादगी में भी है वोह सरदार ए ख़ूबां देखिए

क्या मुक़द्दस ज़ात है जिस की निराली हर अदा

नौशा ए बज़्म ए जिनां वोह बंदा ए रब्ब ए जहां

हूर ओ गिलमां जिस की ख़िदमत पर मुक़र्रर हैं सदा

तेरे नूर ए फ़ैज़ से ख़ैरात दुनिया को मिली

हम को भी हद मुअ'ज़्ज़मा का मिले सदक़ा शहा

या इलाही ! तेरे बंदे के दर पर नूर पर

गर्दिश ए अय्याम का मैं तुझ से करता हूं गिला

या इलाही ! बेनियाज़ ए दहर तू कर दे मुझे

दूर कर दे मेरे दिल से उल्फ़त ए हर मा सिवा

अल्लाह अल्लाह ये नसीब ए अख़्तर ए शिरीं सुख़न

फ़ैज़ ए मौला से है वोह सालार का मिदहत सरा.

68. ख़्वाजा ए हिंद वोह दरबार है

ख़्वाजा ए हिंद वोह दरबार है आला तेरा
ख़ुसरव ए दहर हुआ मांगने वाला तेरा

फ़ैज़ सुल्तान ए सख़ावत है निराला तेरा
कभी महरूम नहीं फिरता है मंगता तेरा

तेरी चौखट पे जो आया वोह बना शाह ए समां
ख़ुसरव ए दहर में है फ़रमान चलता तेरा

सदका है ख़्वाजा ए अजमेर का तुझ पे अख़्तर
बुर्ज ए रिफ़अत में चमकता है सितारा तेरा.

69. जमाल ए हज़रत ए ईमाम अहमद रज़ा का आईना तुम हो

तुम्हें जिसने भी देखा कह उठा अहमद रज़ा तुम हो
जमाल ए हज़रत ए ईमाम अहमद रज़ा का आईना तुम हो

नहीं हामिद रज़ा हम में मगर वजह ए शकीबाई
ख़ुदा रखे तुम्हें ज़िंदा मेरे हामिद नुमा तुम हो

तुम्हारे नाम में तुम को बुज़ुर्गी की सनद हास
रज़ा वज्ह ए बुज़ुर्गी है रज़ा ए मुस्तफ़ा तुम हो

तुम्हारे नाम में यूं हैं रज़ा ओ मुस्तफ़ा दो जुज़
रज़ा वाले यक़ीनन मुस्तफ़ा के मुस्तफ़ा तुम हो

तुम्हारी रिफ़'अतों की इब्तिदा भी पा नहीं सकता
के उफ़्तादाह ज़मीं हूं मैं बुलंदी का समा तुम हो

हयात ओ मौत वाबस्ता तुम्हारे दम से हैं दोनों
हमारी ज़िंदगी हो और दुश्मन की क़ज़ा तुम हो

ये नूरी चेहरा ये नूरी अदाएं सब ये कहते हैं

शबी ए ग़ौस हो नूरी मियां हो और रज़ा तुम हो

रज़ा जो यान ए रब थामे हुए हैं इसलिए दामन

रज़ा से काम पड़ता है रज़ा ए किब्रिया तुम हो

जनाब ए मुफ़्ती ए आ'ज़म के फ़ैज़ान ए तजल्ली से

शबिस्तान ए रज़ा में ख़ैर से अख़्तर रज़ा तुम हो.

70. मनक़बत दर शान हुज़ूर मुफ़्ती ए आ'ज़म

मुफ़्ती ए आ'ज़म ए दीन ए ख़ैरुलवरा

जलवा ए शाने इ'रफ़ान ए अहमद रज़ा

दीद ए अहमद रज़ा है तुम्हें देखना

ज़ात ए अहमद रज़ा का हो तुम आईना

क्या कहूं हक़ के हो कैसे तुम इक़्तिदा

मुक़्तदायान ए हक़ करते हैं इक़्तिदा

उनकी मिदहत को मैं किस से मांगू ज़ुबां

क्या मक़ाम ए सुरैय्या बताए सरा

अहमद ए नूरी के हैं ये मज़हर तमाम

ये हैं नूरी मियां नूरी हर हर अदा

नूर के मय पिलाते हैं ये रोज़ ओ शब

जिस के पीना हो आए है मयख़ाना वा

हैं बोहोत इ'ल्म वालें भी और पीर भी

आंखों देखा ना उन सा ना कानों सुना

उन का साया सरों पर सलामत रहे

मुंह सड़ाते रहे यूं ही दुश्मन सदा

उन के हासिद पे वो देखो बिजली गिरी

वोह जला देख कर वोह जला वोह जला

वोह जलेंगे हमेशा जो तुझ से जलें

मर के भी दिल जलों को ना चैन आएगा

आशिक़ों के जिगर उन से ठंडे रहें

दुश्मनों पर रहें बन के शक्ल ए क़ज़ा

ज़ैदुआ' उलानस्ती अजमाइ'हिम

इस्तजिब रब्बना या मुजीबद दुआ'

और होंगे जिन्हें तुझ से लालच हो कुछ

तेरे अख़्तर को काफ़ी है तेरी रज़ा.

71. चल दिए तुम आंख में अश्कों का दरिया छोड़ कर

चल दिए तुम आंख में अश्कों का दरिया छोड़ कर

रंज ओ फ़ुरक़त का हर इक सीने में शौ'अला छोड़ कर

लज़्ज़त ए मय ले गया वोह जाम ए मीना छोड़ कर

मेरा साक़ी चल दिया ख़ुद मय को तिशना छोड़ कर

हर जिगर में दर्द अपना मीठा मीठा छोड़ कर

चल दिए वो दिल में अपना नक़्श ए वाला छोड़ कर

जामा ए मुश्कीं लिए अ'र्श ए मुअ'ल्ला छोड़ कर

फ़र्श पर आए फ़रिश्ते बज़्म ए बाला छोड़ कर

आ'लम ए बाला में हर सू मरहबा की गूंज थी

चल दिए जब तुम ज़माने भर को सूना छोड़ कर

मौत ए आ'लिम से बंधी है मौत ए आ'लम बेगुमां

रूह ए आ'लम चल दिया आ'लम को मुर्दाह छोड़ कर

मुत्तक़ी बन कर दिखाए इस ज़माने में कोई

एक मेरे मुफ़्ती ए आ'ज़म का तक़्वा छोड़ कर

ख़्वाब में आ कर दिखाओ हम को भी ऐ जां कभी

कौन सी दुनिया बसाई तुमने दुनिया छोड़ कर

एक तुम दुनिया में रह कर तारिक ए दुनिया रहे

रह के दुनिया में दिखाए कोई दुनिया छोड़ कर

उस का ऐ शाह ए ज़मन सारा ज़माना हो गया

जो तुम्हारा हो गया सारा ज़माना छोड़ कर.

रहनुमा ए राह ए जन्नत है तेरा नक़्श ए क़दम

राह ए जन्नत तय ना होगी तेरा रस्ता छोड़ कर

मिस्ल ए गिर्दों साया ए दस्त ए करम है आज भी

कौन कहता है गए वोह बेसहारा छोड़ कर

हो सके तो देख अख़्तर बाग़ ए जन्नत में उन्हें

वोह गया तारों से आगे आशियाना छोड़ कर.

72. ला'अल ए यकता ए शह ए अहमद रज़ा मिलता नहीं

ज़ीनत ए सज्जादाह ओ बज़्म ए क़ज़ा मिलता नहीं

ला'अल ए यकता ए शह ए अहमद रज़ा मिलता नहीं

वो जो अपने दौर का सिद्दिक़ था मिलता नहीं

मेहरम ए राज़ ए मोहम्मद मुस्तफ़ा मिलता नहीं

अब चराग़ ए दिल जला कर हो सके ढूंढिए

पर तो ग़ौस ओ रज़ा ओ मुस्तफ़ा मिलता नहीं

आ'लम ए सौज़ेदरुं किस से कहूं किस से कहूं

चराग़ साज़ ए दर्द ए दिल दर्द आशना मिलता नहीं

आ'लिमों का मोअ'तबर वोह पेशवा मिलता नहीं

जिस पे नाज़ां इ'ल्म था वोह क्या हुआ मिलता नहीं

ज़ाहिदों का वोह मुसल्लम मुक़्तदा मिलता नहीं

जिस पे नाज़ां ज़ोहद था वोह पारसा मिलता नहीं

फ़र्द ए अफ़राद ए ज़मां शैख़ ए अश्याख़ ए जहां

कामलान ए दहर का वोह मुंतहा मिलता नहीं

इस्तेक़ामत का वोह कोह ए मोहकम ओ बाला तरीं

जिस के जाने ज़माना हिल गया मिलता नहीं

चार यारों की अदाएं जिस में थी जलवा नुमां

चार यारों का वोह रौशन आईना मिलता नहीं

एक शाख़ ए गुल नहीं सारा चमन अंदोहगीं

मुस्तफ़ा का अंतलीब ए ख़ुशनवा मिलता नहीं

मुफ़्ती ए आ'ज़म का ज़र्रा क्या बना अख़्तर रज़ा

महफ़िल ए अंजुम में अख़्तर दूसरा मिलता नहीं.

73. मनक़बत दर शान ए मुफ़स्सिर ए आ'ज़म ए हिंद अलैहिर्रहमा

हामी ए दीन ए हुदा थे शाह ए जीलानी मियां
बिलयक़ीं मर्द ए ख़ुदा थे शाह ए जीलानी मियां

मिस्ल ए गुल हंगाम ए रुख़सत मुस्कुराते ही रहे
पैकर ए सब्र ओ रज़ा थे शाह ए जीलानी मियां

चल बसे हम को दिखा कर राह सीधी ख़ुल्द की
दीन ए हक़ के रहनुमा थे शाह ए जीलानी मियां

हिज्र की लाए ना ताब ए आख़िरश जाही मिले
आ'शिक़ ए ख़ैर उल वरा थे शाह ए जीलानी मियां

उन के हर इरशाद से हर दिल को होती थी जिला
मजहर ए शान ए ख़ुदा थे शाह ए जीलानी मियां

माल ओ ज़र सब कुछ निछावर राह ए हक़ में कर गए

कैसे मुख़लिस पेशवा थे शाह ए जीलानी मियां

हम को बिन देखे तुम्हें अब कैसे चैन आए हुज़ूर

तुम शकीब ए अक़रबा थे शाह ए जीलानी मियां

सब्र तस्लीम ओ रज़ा की अब हमें तौफ़ीक़ दे

तेरे बंदे ऐ ख़ुदा ! थे शाह ए जीलानी मियां

शोर कैसा है ये बरपा ग़ौर से अख़्तर सुनो

पर तौ ए अहमद रज़ा थे शाह ए जीलानी मियां.

74. मनक़बत दर शान ए मुफ़स्सिर ए आ'ज़म ए हिंद अलैहिर्रहमा

किस के ग़म में हाए तड़पता है दिल

और कुछ ज़्यादा उमंड़ आता है दिल

दिल तेरा हरगिज़ बहकने का नहीं

तू अ'बस बीमार बहलाता है दिल

हाए दिल का आसरा ही चल बसा

टुकड़े टुकड़े अब हुआ जाता है दिल

कौन जाने राज़ ए महबूब ए मुहिब्ब

क्यों लिया जाता दिया जाता है दिल

जां बा हक़ तस्लीम हो जाना तेरा

याद कर के मेरा भर आता है दिल

ऐ त'आला अल्लाह शान ए औलिया

इन के अस्ताग़्ना पे बल खाता है दिल

मैं भी हूं कुछ दिन का मेहमान ए जहां

ताब ए हिजरां अब नहीं लाता है दिल

खा चुका है बारहा कितने फ़रेब

फिर भी दुनिया पर मिटा जाता है दिल

तेरे पिछे हो चुका बर्बाद मैं

रहने दे अब और क्या भाता है दिल

छोड़ दे हां और ग़फ़लत छोड़ दे

क्यों सू ए दोज़ख़ लिए जाता है दिल

अपने मौला को मना ले बदनसीब

ठोकरें दर दर की खाता है दिल

अपने अख़्तर पे इ'नायत कीजिए

मेरे मौला इस को बहकाता है दिल.

75. बा मौक़ा'अ वफ़ात हसरत ए आयात ए ख़ाल ए मोहतरम जनाब उम्मीद साहब रज़वी

ये इदारा जिस को कहिए गुलिस्तान ए इ'ल्म ओ फ़न
हो गया रुख़सत से तेरी मौर्द रंज ओ महन

मंज़र ए इस्लाम के थे कारकून तुम नामवर
ख़िदमत ए इस्लाम की थी तुम को क्या सच्ची लगन

मुफ़्ती ए आ'ज़म के दिलबंद ओ जिगर पारे थे तुम
कैसे देखेंगे उन को ग़मगीं हाए सब अहले सुनन

एक वो हैं जो मरे तो जाविदां हो कर मरे
एक वोह ज़िंदा हैं गोया नाअ'श बे गौर ओ कफ़न

सो रहे हैं लहद में कुछ इस तरह चैन से
नाज़ बेफ़िक्र हो कर जैसे सो जाए दुल्हन

मर्ज़ी ए मौला है बंदों ! सब्र से कुछ काम लो

ये दुआ' मांगो उन को बख़्श दे वोह ज़ुल मनन

शिद्दत ए ग़म से आ'ज़ा इस क़दर बुझ से गए

चांद से चेहरों को अख़्तर लग गया जैसे गहन.

76. मनक़बत दर शान ए हुज़ूर मुजाहिद ए मिल्लत अलैहिर्रहमा

كيف الوصول صاحِ لذى الشامخ الأشم
من أعجز الشوامخ العليامن الشمم

مارِىّ مثله فى الفضل والثناء
فهوا السماء ليست من فوقها سما

فاق المجاهدين هذا المجاهدين هذا المجاهد
هذا الفتى بذاكم شهدا المشاهد

ان الذين قالو الله ربنا
عاشوا بموتهم فى دوحة المُنى

هل ذاكم حبيب الرحمن ثاويا
فى الرمس ام سراج فى التراب خافيا
شبهة ورمسا قد ضمّ جسمه
بالبدر حلّ قى برج فضمّه

مارمسه سوئ مراة عينه
قالو متى مضى أرأيت اختر
ناديتُ خاضَ فى النعماء يحبر

77. मनक़बत दर शान ए हुज़ूर मुजाहिद ए मिल्लत अलैहिर्रहमा

दिल ने कहा मुजाहिद ए मिल्लत ढूंढिए
लेकर चराग़ शाह ए विलायत को ढूंढिए

मैने कहा के सुन ऐ दिल ए मुब्तला ए ग़म
अपनी ये कब मजाल के पा जाएं उनको हैं

हम ज़ेर ए आसमां उन्हें यूं देखते रहे
वोह कबके आसमां के परे ख़ुल्द में गए

तुम क्या गए मुजाहिद ए मिल्लत जहां गया
आ'लिम की मौत क्या है आ'लम की है फ़ना

मैं रहलत ए मुजाहिद ए मिल्लत को क्या कहूं
यूं समझो गिर गया कोई इस्लाम का सुतून

हर सू ये कह रहे हैं अ'नादील चमन चमन

ऐ बुलबुल ए मदीनाह कहां है तू ख़ुश दहन

वोह यादगार ए हुज्जत उल इस्लाम अब नहीं

अनदोहगीं है आज शबिस्तान ए इ'ल्म ए दीं

नसरीन ए गुलिस्तान ए सद्र उश शरियाह बूद

बू ए ख़ुदश गुज़ाश्ताह अंदर चमन राबूद

ख़ुर्शीद ए सुन्नियत ने चादर जो ओढ़ ली

ज़ुल्मत में क़ाफ़िले की वोह रफ़्तार थम गई

पैक ए नादा ओ ग़ुफ़रान उन की वफ़ात थी

अख़्तर ख़ुशी मनाओ विसाल ए हबीब की.

78. मनक़बत दर शान ए अहसन उल उलमा मारहरवी अलैहिर्रहमा

हक़ पसंद ओ हक़ नवा ओ हक़ नुमा मिलता नहीं

मुस्तफ़ा हैदर हसन का आईना मिलता नहीं

ख़ूबसुरत ख़ूबसीरत वोह अमीन ए मुज्तबा

अशरफ़ ओ अफ़ज़ल, नजीब ए ज़ाहिरा मिलता नहीं

ख़ुश बयान ओ ख़ुशनवा ! ओ ख़ुश अदा मिलता नहीं

जो मुजस्सम हुस्न था वोह क्या हुआ मिलता नहीं

ख़ुश बयान ओ ख़ुशनवा ! ओ ख़ुश अदा मिलता नहीं

दिल नवाज़ी करने वाला दिलरुबा मिलता नहीं

पैकर ए सिद्क़ ओ सफ़ा वोह शम'आ राह ए मुस्तफ़ा

जो मुजस्सम ए दीन था, वोह क्या हुआ मिलता नहीं

मर्द ए मैदान ए रज़ा वोह हैदर ए दीन ए ख़ुदा

शेर ए सीरत शेर ए दिल हैदर नुमा मिलता नहीं

हाजतें किस को पुकारें किस की जानिब रुख़ करें

हाजतें मुश्किल में हैं मुश्किल कुशा मिलता नहीं

वोह हैं उन में जो कहें अजसानुमा अरवाहुना

सूरत ए रूह ए रवां है बरमला मिलता नहीं

डूब तो बहर ए फ़ना में फिर बक़ा पाएगा तू

जो ये कहे कर दे गया अपना पता मिलता नहीं

सुन्नियों की जान था वोह सय्यदों की शान था

दुश्मनों के वास्ते पैक ए रज़ा मिलता नहीं

वोह अमीन ए अहले सुन्नत राज़दार ए मुर्रज़ा

अशरफ़ ओ अफ़ज़ल, नजीब ए बा सफ़ा मिलता नहीं

शिब्ल ए शेर ए कर्बला वोह दफ़'आ ए कर्ब ओ बला

वोह हमारा ग़मज़दा ग़म आशनाह मिलता नहीं

एक शाख़ ए गुल ही क्या ग़मगीन है सारी फ़ज़ा

मुस्तफ़ा के अ'नरलीब ए ख़ुशनवा ! मिलता नहीं

याद रखना हम से सुन कर मिदहत ए हैदर हसन

फिर कहो गे अख़्तर ए हैदर नुमा मिलता नहीं.

79. ऐ नक़ीब ए आ'ला हज़रत

ऐ नक़ीब ए आ'ला हज़रत मुस्तफ़ा हैदर हसन
ऐ बहार ए बाग़ ए ज़हरा मेरे बरकाती चमन

ऐ तमाशा गाह ए आ'लम चहरह ए ताबान तू
तू कुजा बहर ए तमाशा मी रवी क़ुरबान तू

इस्तेक़ामत का वोह कोह ए महकम ओ बाला हसन
अशरफ़ ओ अफ़ज़ल नजीब ए इ'तरत ज़हरा हसन

तूर ए इ'रफ़ान ओ उलू ओ हम्द ओ हुस्ना ओ बहा
ज़िंदाह बाद ऐ पर तव ए मूसा ओ अ'क्स ए मुस्तफ़ा

आ'लम ए सोज़ ए दरूं किस से कहूं किस से कहूं
दिल शुदाह ज़ार ए चुनां ओ जां शुदाह ज़ैर ए चुनूं

था जो अपने दर्द की हक्मी दवा मिलता नहीं
चाराह साज़ ए दर्द ए दिल दीद आशनाह मिलता नहीं

غِبْتَ فی مارهره مِصْبَاحَ الدّنی شمسَ الانام
یا زُکانا مصطفانا بعدَك الدُّنیا ظَلاَم

یا سَماءَالمجدِ دُمتم ما یُدانیکم سمی
ذلَّ من عزَّ علیکم مَن لَّکم ذلّ السمی

جُوْدُکُم فَاَقَ الجَوَادِی وبِکم جَادَت سمی
خَیْرُکُمْ مَلأَالبوادی صِیْتُکُم عمَّ الوَری

اِنَّمَا المیّتُ جَهول ذو هوی لا أنتم

غِبْتَ فی مارهره مِصْبَاحَ الدّنی شمسَ الانام
یا زُکانا مصطفانا بعدَك الدُّنیا ظَلاَم

یا سَماءَالمجدِ دُمتم ما یُدانیکم سمی
ذلَّ من عزَّ علیکم مَن لَّکم ذلّ السمی

جُوْدُکُم فَاَقَ الجَوَادِی وبِکم جَادَت سمی
خَیْرُکُمْ مَلأَالبوادی صِیْتُکُم عمَّ الوَری

اِنَّمَا المیّتُ جَهول ذو هوی لا أنتم

एक शाम ए अंजुमन थी जो बिलाखिर बुझ गई

अब उजाले को तरसती है ये बज़्म ए आगाही

सौगवारों को शाकीबाई का सामां कम नहीं

अब अमीन ए क़ादरियत बन गया तेरा अमीन

इ'ल्म ओ अहले इ'ल्म की तौक़ीर था शेवा तेरा

जानशीं में हो नुमायां जलवाह ए ज़ैबा तेरा

इ'ल्म का इस आस्ताने पर सदा पहरा रहे

सूरत ए ख़ुर्शीद ए ताबां मेरा मारहेरा रहे

अख़्तर ए ख़स्ता है बुलबुल गुलशन ए बरकात का

देर तक महके इक गुल गुलशन ए बरकात का.

80. सेहरा

अलहम्दुलिल जव्वाद
अलवाहिबुल मुराद
हम्द है उस जव्वाद को
बख़्शनदाह मुराद को

اَلْحَمْدُ لِّلْجَوَّادْ
اَلْوَاهِبُ الْمُرَادْ

मन्नान या आ'मादी
शुकरन अ'लर रुशादु
मन्नान ऐ मेरे अमाद
शुक्र हिदायत ओ रुशाद

مَنَّانْ يَا عَمَادِىْ
شُكْراً عَلَى الرُّشَادُ

व अ'ला ज़ुल इयादी
फ़िना अलल तमादी
शुक्र है नियामतों का भी
दाईम जो हम पे हैं तेरी

وَعَلَى ذُه الْاِ يَّادِىْ
فِيْنَا عَلَى الْتَمَادِىْ

सुम्मास सलाता अ'ला

ख़ैर उल वरा आ'दि

तस्लीम उस हबीब ﷺ पर

सब से अच्छा रहबर

ثُمَّ الصَّلاَةَ عَلَى

خَيْرُالْوَرَى الْعَادِىْ

वलअल मुअ'तमादी

वससोहबा असयादी

और नबी की आल पर

यारान ए ख़ुशख़िशाल पर

وَلآلْ مُعْتَمَدِىْ

وَالصُّحْبَ اَسْيَادِىْ

मा ग़रदत वरक़ा

व तरन्नुमाश शादी

जब तक तारे रहें या चहचहे

जब तक रहे ये ज़माने

مَا غَرْدَتْ وَرْقَا

وَتَرَنُّمَ الشَّادِىْ

ग़ाबुस सलामू या

अहला ज़न्नादी

बाअ'द सलाम सुन्नीयों !

अर्ज़ ये मेरी अब सुनो

غَبُ السَّلاَمْ يَا

اَهْلَ ذَالنَّادِىْ

इन्नल निकाहु सुन्नती

मन अहमदुल आ'बाद

है ये निकाह ख़ुश निहाद

सुन्नत ए अहमद उल इ'बाद ﷺ

اِنَّ النِّکَاحُ سُنَّةِ

مَنْ اَحْمَدُ الْعَبَادْ

सल्ला अ'लैही रब्बी

मा जादातुल जव्वादी

उन पर हो रब की रहमतें

जब तक रहें ये बारिशें

صَلّٰی عَلَیْهِ رَبِّیْ

مَا جَادَتُ الْجَوَّادِیْ

अबशारर अख़ी बिसाबीहाह

ग़ाराआ समअ'ल क़यादी

भाई को दोनों ये ख़ुश ख़बरी

आई सबीहाह ख़ुश गौहर.

اَبْشَرْ اَخِّیْ بِصَبِیْحَه

غَرَاء سِمح الْقَیَّادِ

81. तहनियत तक़रीबे शादी

मुज़्दाह देती दिल ए मुज़्तर को सबा आई है
चल सुलैमां के यहां अंजुम आराइ है

चल दिखाएं वोह किसी का तुझे दूल्हा बना
उठ के क्या ख़ूब ये सामान ए शाकिबाई है

ग़म ए हस्ती को भूला दे ये है बज़्म ए मस्ती
झूम कर तू भी के फ़ज़ा सारी ही सोहबाई है

दिल भी आख़िर ये पुकार उठा के ये बाद ए सबा
आफ़रीन क्या तेरी बातों की पज़ीराई है

हम भी माह ए जबीं को जरा देखें तो सही
माह जबीनों की नज़र जिसकी तमाशाई है

या ख़ुदा ! ताज़ा रहें फूल ये सेहरे के सदा
ना कभी जाए जो ये फ़स्ल ए बहार आई है

इन दो फूलों से खिलें फूल कुछ ऐसे या रब !

बुलबुल ए दीन ए नबी जिस का तमन्नाई है

जिस की ख़ुशबू से मुअ'त्तर दमाग़ ए आ'लम

की मुझे क़ौम से इल्हाद की बू आई है

हमसफ़ीरों में ये चर्चे हैं तेरे अख़्तर

बुलबुल ए बाग़ ए रज़ा ख़ूब नवा पाई है.

82. सेहरा

कैसा बाग़ ओ बहार है सेहरा

किस क़दर ख़ुशगवार है सेहरा

नूर जान ए बहार है सेहरा

ग़ैत ए लालाह ज़ार है सेहरा

किस की रुख़ पर निसार है सेहरा

किस लिए तार तार है सेहरा

क्या गौहर है बजाए गुल इस में

किस क़दर अब दार है सेहरा

रहमत ए दो जहां के जलवे में

गुलशन ए नौ बहार है सेहरा

रज़वियों की बहार है सेहरा

सुन्नियों का क़रार है सेहरा

नज्दियों को कहां है ताब ए नज़र

आतिश ए शौलआ' बार है सेहरा

सीना ए यार के लिए ठंडक

दिल ए आ'दा में ख़ार है सेहरा

चश्म ए बद दूर क्यूं ना हो तुझसे

तेरे रुख़ का हिसार है सेहरा

गुलशन ए फ़ैज़ ए मुफ़्ती ए आ'ज़म

रश्क सद लाला ज़ार है सेहरा

अज़ तुफ़ैल ए शफ़ि'इ ए बहर ए स'ईद

ज़िंदगी की बहार है सेहरा

फूल सेहरे के कह रहे हैं सुनो

मां के दिल की पुकार है सेहरा

हैं रफ़ीक़ ओ हसन भी नाअ'राह ज़न

वाह क्या ख़ुशगवार है सेहरा

रुख़ ए रज़िया पे ताज़गी है नई

ताज़गी का निखार है सेहरा

फ़ातिमा साबिराह के सदक़े में

बाक़ी पायदार है सेहरा

शहीदाह पर भी कैफ़ तारी है

किस ख़ुशी का ख़ुमार है सेहरा

है ज़ुलेख़ा भी पैकर ए हैरत

क्या अनोखा निगार है सेहरा

और आ'तिया भी मुस्कुराती है

मुस्कुराती बाहर है सेहरा

सादिया और ज़ुबैदाह गाती हैं

वाह क्या शाहकार है सेहरा

हो अमान ओ हामिदाह को मुज़्दाह

रहमत ए किर्दीगार है सेहरा

खींच लाई शमीम हर दिल को

किस क़दर ख़ुशगवार है सेहरा

अ'क़्द फ़रमान ए सरवर ए दीं है

इज़्न ए परवरदिगार है सेहरा

रंग ए तूबा है पर्दाह ए गुल में

क्या बहिश्ति बहार है सेहरा

बंदिश ए ख़ुशगवार बुलबुल ए गुल

दो दिलों का क़रार है सेहरा

नूर में सब नहा गई महफ़िल

नूर का आबशार है सेहरा

सब लगाते हैं ना'रा ए तहसीन

वाह क्या खुशगवार है सेहरा

चांद है चेहरा ए स'ईद अख़्तर

और सितारों का बहार है सेहरा.

83. बा तक़रीबे सालगिराह

नसीम ए सुबह वोह उठाती क्यूं आई
ये कैसी कैफ़ ओ मसर्रत की एक लहर आई

हर एक लब पे तबस्सुम ये कैसा रक़्सा है
अ'ज़ीम जी के यहां क्यूं हुजूम ए यारां है

सुना है सालगिराह है दुलारी बेबी की
मची है धूम अ'ज़ीज़ों में प्यारी बेबी की

बाफ़र्त शर्म निराला ही इस का आ'लम है
पसीना रुख़ पे जो बहता है रश्क ए शबनम का

कुछ इस अदा से हुई है वोह अंजुम ए आरा
के मह ओ शान जहां में हो जैसे वोह यकता

वोह बोलती है तो बुलबुल कोई चहकती है
ख़ुराम करती है तो बर्क़ सी चमकती है

वोह कितनी भोली है और कितनी नेक है बेबी

ग़र्ज़ के अपने मुहासिन में एक है बेबी

दुआ' ए आख़िर में है बारगाह ए रहमां में

इलाही ! रोज़ तरक़्क़ी कर इस के ईमां में.

84.أ عيناى جود اولا تجمدا

أعيناى جودا ولا تجمدا
وكونا لخير البلادى فدى
ألا تبكيان لها من أسى
ألا تهميان لارض الهدى
وما قدأبيح لها من حمى
وما قدأريق بها من دِما
ألا تبكيان لبغدادنا
وقد قذفوه شرارالعدى
ألا فاسلوانى بدمع همى
فان البكاء لخيرُ العزاء
بلا يا الزمانِ غدتْ ديمه
وانّ الخمينى اشدّا البلاء
أدم عزّمكّة يا ربّنا
وبُعدًا لمن ضام امّ القرى
وتَباً لمن رفضوادينهم
و سُحقا لشِرعة عيدا لهوى
لقد ضلّ قوم بأصنا مهم
وامّا بهذا الخمينى فلا
كأين بايران من مُضحك

ولکنّه ضحك کا لبکا

جهلتم على النّاس کی تجهلوا

براقش تجنی على نفسها

قطعتم عنِ النّاس حبلکم

فجرّو الیکم حبال الردی

خمینیة ان شئتم رفعة

فدینوا بما دان أهل الرضا

وکُفّوا عن الرفض خیرألکم

وکُفّوا عن النّاس دأب الأذی

وخلّوالعراق یخلیکم

وکو نوالجیرتکم تکم أوفیا

وصافو المؤدة جیرانکم

یکونوالکم جیرنة أصدقا

وراعوا الخلیج کأ وطانکم

فلا تشعلوا فیه نارالوغی

وکونو نوا مع العُرب أقوی ید

وکونو اعلى من سواکم یدا

دعو امن تطرّف فی معل

وفرّوالی الله والمصطفی ﷺ

الی المصطفی فافزعواتهتدوا

والّا سلكتم طريق التوى
كذاكم تعيشون فى منعة
والّا ذهيتم أيادى سبا

ألايا خميني يا فاجر .85

ألا يا خمينى يا فاجر

أفق من ضلالك يا خاسر

أفيضوا بهيجاء أو أقصروا

فجيش العراق هو الظافر

أبى أن يّهون العراق الأبى

فمجد العراق هوالظاهر

وانّ العراق بعلياءه

لفى غاية مالها حازر

ليهنا العراق الحبيب العلى

ومجد مجيد له زاهر

يظلّ العراق بحرزِالا له

منيعا فليس له كاسر

ويردى الخمينى وأخزابه

اذلّاء ليس لهم ناصر

ويكفى العراق قتالَ العدى

مليكُ الورى القادر القاهر

تد عَو اقَحُـجّو ا الی لذدن 86.

سمعنا برهط خمينية

تداعوافَحُجَوا الى لندن

تَوافَوا بلندن فى مجْمع

وجاء وابرأى لهم ألعنِ

أرادو اضلال الورى مثلهم

فودّوا امامة ذالأرعنِ

تمنّوا ولاية أرض الهدى

ويأبى الأسوى المومنِ

وحقّ أُولِى البَغيِ فى مكّة

جَلاء عن البيت والمأمن

ومن كان حربا على مكّة

فما أن يحجَ سوى لندنِ

ومن سام أهل الحجاز أذى

أُديمت عليه رحى مدين

المديح النبوي .87

صَلَّى الإِ لَهُ عَلَى هُدَى الْحَيَرَانِ
اَلْمُصْطَفَى رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ
يَا مَطْلَعَ الْأنْوَارِ فِيْ كُلِّ أَزْمَانِ
مَنْ سَرَّهُ سَارَ فِيْ كُلِّ أَكْوَانِ
اَلْمُصْطَفَىٰ أَصْلٌ أَكْرِمْ بِنَخْلَتِهِ
اَلْمُصْطَفَىٰ فَرْعٌ يَسْمُوْبِهِ عَدْنَانِ
أَكْرِمْ بِأَطْوَارٍ لِلْمُصْطَفَىٰ كَثُرَتْ
شَجَرٌ بِبَزْرٍ وَطَلْعٍ وَأَغْصَانِ
أَكْرِمْ بِمُسْتَتِرٍ فِى كُلِّ مُزْدَهِرٍ
نُوْر بِنُوْرٍ وَزَهْرٍ وَبُسْتَان
نَفْسِى الْفِدَاءُ لِرَوْضٍ أَنْتَ مُزْهِرُهُ
فِيْهِ الْعَفَافُ وَفِيْهِ جُوْدٌ يَدُوْمَانِ
فَاقَ النَّبِيِّنَ فِيْ خَلْقٍ وَفِيْ خُلُقٍ
وَلَيْسَ لَهُ فِيْ عِلْمٍ وَلاَ كَرَمٍ مِنْ ثَانِىْ
أَنْتَ الَّذِيْ مِثْلُهُ فِيْ الْكَوْنِ مُمْتَنِعٌ
صَلَّى عَلَيْكَ اللهُ يَا خَيْرَ إِنْسَانِ
سِرُّ الْوُجُوْدِ يُجَلِّي كُلُّ مُزْدَانِ
كَالْبَذْرِ مَدْ سُوْساً يَبْدُوْ بِرَيْحَانِ

88. कुछ ऐसा करदे मेरे

कुछ ऐसा करदे मेरे किर्दगार आंखों में
के जलवा गर रहे वोह गुल इ'ज़ार आंखों में

वोह लाला रुख़ हो अगर जलवा बार आंखों में
बहार ए लाला हो फिर पायदार आंखों में

नज़र ये कहती है बे इख़्तेयार आंखों में
उन्हें जो देखे वही है हज़ार आंखों में

उन्हें ना देखा तो किस काम की है ये आंखें
के देखने की है सारी बहार आंखों में

अभी तो रूह कश ए अ'र्श ए बरीं नज़र मेरी
जो आए अ'र्श ए नशीं ताजदार आंखों में

करम से जलवा करें जब निगार आंखों में
खींच आए सारी चमन की बहार आंखों में

बनाए दिल को वोह घर राहगुज़ार आंखों में

नज़र हो क़दमों पे उन के निसार आंखों में

खींच आई जान पाए इंतज़ार आंखों में

करम से लीजिए अब तो क़रार आंखों में

बसे हैं जब से मदीने के ख़ार आंखों में

हुआ है सहन ए चमन ख़ार ज़ार आंखों में

गुज़र हो उन का कभी बेक़रार आंखों में

गौहर हो नज़र ए क़दम अश्कबार आंखों में

फिर आए दिन मेरे अख़्तर शबे हुज़ूरी में

करम से जलवाह करे जब निगार आंखों में

निगाह ए मुफ़्ती ए आ'ज़म की है ये जलवागरी

चमक रहा है जो अख़्तर हज़ार आंखों में.

89. अब्र ए करम गेसू ए मोहम्मद ﷺ

अब्र ए करम गेसू ए मोहम्मद ﷺ

दोनों हरम अबरू ए मोहम्मद ﷺ

सब की नज़र है सू ए का'बा

का'बा तके है रू ए मोहम्मद ﷺ

का'बा का'बे को किसने बनाया किब्ला

का'बे का का'बा रू ए मोहम्मद ﷺ

सज्दाह ए सर है सू ए का'बा

सज्दाह ए दिल है सू ए मोहम्मद ﷺ

सारे चमन में किस की ख़ुशबू

ख़ुशबू है ख़ुशबू ए मोहम्मद ﷺ

किस की चमक है पैकर ए गुल में

गुल में खिला है रू ए मोहम्मद ﷺ

धारे चले उंगली से उन की

देखो वो निकली जू ए मोहम्मद ﷺ

सब से अनोखा मू ए मोहम्मद ﷺ

सब से निराली कू ए मोहम्मद ﷺ

किस मु से देता है गवाही

मू ए मोहम्मद मू ए मोहम्मद ﷺ

ज़िंदा है वल्लाह ज़िंदा है वल्लाह

जान ए दो आलम रू ए मोहम्मद ﷺ

रश्क ए तैबाह क्या है दिखाऊं

देखो क़द ए दिल जू ए मोहम्मद ﷺ

भीनी भीनी ख़ूशबू महकी

ये राह महकी वोह राह महकी

खुल गए जब के सू ए मोहम्मद ﷺ

अख़्तर ए ख़स्ता चल दिए जिनान को

बाग़ ए जीनां है कू ए मोहम्मद ﷺ

90. ऐ अमीन ए शरीअ'त

छोड़ कर आप सारा जहां चल दिए

ऐ अमीन ए शरिअ'त कहां चल दिए

दे के हस्ती का अपनी निशां चल दिए

सब की मंज़िल जहां है वहां चल दिए

कैसे माह ए मुबीं बेगुमां चल दिए

कितने ज़ेरे ज़मीन आसमान चल दिए

इ'श्क़ ए सरवर में मर के अमर हो गए

और फ़ना हो के सू ए जिनां चल दिए

आगे आगे अमीन ए शरि'अत गए

पीछे अश्कों के सैल ए रवां चल दिए

दाग़ ए इ'श्क़ ए नबी दिल में रखे रहे

ले के शाम ए लहद शादमां चल दिए

बाग़ ए अहमद रज़ा के गुल ए ख़ुशनुमां

मुस्कुराते हुवे गुलसितां चल दिए

देखने वालो ही भर के देखो हमें

कल ना रोना के अख़्तर मियां चल दिए.

91. चांद से उनके चेहरे पर

चांद से उनके चेहरे पर गेसू ए मुश्क फ़ाम दो
एक अनोखी है सहर जिसके भरम है शाम दो

दोनों तरफ़ है चेहरे पे ज़ुल्फ़ ज़ियाहे फ़ाम दो
दो तो सहर हैं बीच में पहलू में उनके शाम दो

उनकी जबीन ए नाज़ पर ज़ुल्फ़ ए सियाह बिखर गई
शब के हसीन परदे में चमके माह ए तमाम दो

पी के पिला के मयकशों टल छत दरून ए जाम दो
क़तराह तो क़तराह ही सही कुछ तो बराह ए नाम दो

तलवों से उनकी है लगी शम्स ओ क़मर की रौशनी
ये हैं उन्हीं की ताबिशें ये हैं उन्हीं के नाम दो

सरबर दरात निहाता अम पर ख़ाक़ ए दर फ़ुतादा अम
बीमार ए हिज्र ए बादा अम अपनी नज़र का जाम दो

गुंचा ए दिल खिलाए जलवा ए रुख़ दिखाइए

जाम ए नज़र पिलाइए दौर चले मुदाम दो

फ़र्श ए नज़र पे हो गुज़र पामाल हूं मैं सर बसर

राहवार ए नाज़ को इधर जुंबिश पए ख़िराम दो

उनकी अमान में रहें जिन के करम से मिल गए

उनके चमन के पासबां हुसाम और हुमाम दो

ये दोनों बेख़तर रहें इस्लाम की सिपर रहें

अ'दा ए दीन पर रहे शमशीर ए बेनियाम दो

कश्ती ए ज़िंदगी अब तो किनारे आ लगी

कहती है तुम से ज़िंदगी अब तो मए दवाम दो

मैदान ए ना'अत ए शह ए दीं अख़्तर है पुरख़तर ज़मीं

ये मजलिस ए ग़ज़ल नहीं मुंह को ज़रा लगाम दो.

92. ज़िंदगी ये नहीं है किसी के लिए

ज़िंदगी ये नहीं है किसी के लिए

ज़िंदगी है नबी की नबी की लिए

ना समझ मरते हैं ज़िंदगी के लिए

जीना मरना है सब कुछ नबी के लिए

चांदनी चार दिन हैं सभी के लिए

है सदा चांद अब्दुन नबी के लिए

अन्ता फ़ीहिम के दामन में मुनकीर भी हैं

हम रहे इ'शरत ए दाईमी के लिए

ऐ'श कर लो यहां मुनकीरों चार दिन

मर के तरसोगे इस ज़िंदगी के लिए

दाग़ ए इश्क़ ए नबी ले चलो क़ब्र में

है चराग़ ए लहद रौशनी के लिए

नक़्श ए पा ए सगान ए नबी देखिए

ये पता है बोहोत रहबरी के लिए

मस्लक ए आ'ला हज़रत सलामत रहे

एक पहचान दीन ए नबी के लिए

मस्लक ए आ'ला हज़रत पे क़ायम रहो

ज़िंदगी दी गई है इसी के लिए

सुलेहकुल्ली नबी का नहीं सुन्नियों

सुन्नी मुस्लिम है सच्चा नबी के लिए

वोह बुलाते है कोई ये आवाज़ दे

दम में जा पहुंचूं मैं हाज़री के लिए

ऐ नसीम ए सबा उन से कह दे शहा

मुज़्तरिब है गदा हाज़री के लिए

जिन के दिल में है इ'श्क़ ए नबी की चमक

वोह तरसते नहीं चांदनी के लिए

जिनके दिल में है जलवे तेरे इ'श्क़ के

चश्मा ए नूर है रौशनी के लिए

अख़्तर ए क़ादरी ख़ुल्द में चल दिया

ख़ुल्द वा है हर एक क़ादरी के लिए.

NAZEERA
Virtual Pablication

